सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणौविजयेते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरसमोदलता

विरचित

❀ द्वादश वाटिका विहार ❀

पाद टिप्पणी संयोजकः-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

सीताराम * सीताराम * सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणौविजयते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरससमोदलता

विरचित

* द्वादश वाटिका विहार *

पाद टिप्पणी संयोजक-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम * सीताराम * सीताराम

❀ श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

प्रस्तुत ग्रन्थ श्री द्वादश वाटिका विहार पर विशिष्ट महापुरुषों को सम्मतियाँ

श्री गुरुधौली (कानपुर) रसिक पीठाधिपति ब्रह्मर्षि कल्प रससिद्ध रसिकाचार्य्य अनन्त श्रीस्वामी सियाराम शरणजी महाराज 'मधुर मंजरी' का

—: सम्मति :—

प्रस्तुत ग्रन्थरत्न श्रीद्वादश वाटिका विहार भावना-सिद्ध सन्त, रसिक प्रवर, श्रीकोठे वाले (स्वामी श्रीरामकिशोर शरणजी) महाराज की भावनासिद्ध वाणी है। इस अनुपम ग्रन्थरत्न में श्री महाराज ने द्वादश बनों की रचना और उनमें श्रीप्रियाप्रियतम जू के बिहार का जैसा चित्रण किया है, वैसे दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है।

यह ग्रन्थ भाव देश के लिये अघट पाथेय है। भावुक साधकों के लिये मानसी भावना वृद्धि की इसमें प्रचुर सहाय्य सामग्री भरी गई है। इस ग्रन्थरत्न का पठन, पाठन और मनन भावुकों के लिये अनुपम लाभप्रद सिद्ध होगा।

प्रकाशक ने इस गुप्त रत्न का प्रकाशन कर भावुक समाज का बड़ा ही उपकार किया है। श्री रसमोद कुंज के युगल नाम जप एवं अष्टयामीय भावना परायण सन्त श्रीशत्रुहन शरणजी महाराज कृत विलक्षण टिप्पणी से ग्रन्थ पाठ में सौष्ठव और स्वारस्य की वृद्धि हुई है। प्रकाशक और विशेष कर टिप्पणी कार तथा संकलन कर्ता श्री विरौली महाराज का भावुक-समाज अनुगृहीत रहेगा। शृङ्गार भावना सिद्ध सन्त की वाणी सदा गोपनीय और संरक्षणीय है।

गुरुधौली
चैत्र सं० २०२६

परमरसिकाचार्य वर्य स्वामी श्रीयुगला-
नन्यशरण वंशोद्भवस्वामी श्रीसीता-
कान्त शरण चरणानुजीवी
श्रीसियारामशरण 'मधुरी'

❀ ❀ ✱

श्री युगल माधुरी कुंज, नजरबाग, श्री अयोध्या जी के रसिकपीठाधिपति श्रीस्वामी मैथिली शरणजी महाराज भक्तमाली की सम्मतिः—

सहर्ष इस रसमोद लताजी के द्वादश वन विहार को अवलोकन कर हृदय में नई नई तरङ्गे उठने लगीं। मन अपने स्वरूपानुरूप रंग में निमग्न हो गया।

श्रीरसमोदलता जीने अनेक जीवों का कल्याण करके अपनी कृपा से उनको प्रिया प्रीतम जू के सामीप्य तक पहुँचा

दिया। अब ये उनके रासायनिक संकलन महानिधि को श्री-नृपनन्दनशरणजी (अनुराग लता), जो आपही के अनन्य आश्रित और प्रिय शरणागत हैं, आज भी श्रीमहाराजजी का गद्दी और श्रीसरकार स्वामिनी जी की सेवा संरक्षण कर रहे हैं, इसके प्रकाशन का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

इस ग्रन्थ को अधिकारी हो भोग कर सकते हैं। श्रीअनन्य कृपापात्र शृङ्गार रस रूप श्रीशत्रुहनशरणजी इसके सम्पादक प्रधान हैं। इनने विलक्षण टिप्पणी लिखकर ग्रन्थ को अलंकृत किया है।

शुभेच्छुक—

श्री मैथिलीशरण, भक्तमाली (सौन्दर्य)

* * *

समस्त तुलसी साहित्य के सुप्रसिद्ध टीकाकार एवं श्री-मंजुरसाष्टयाम तथा मंजुरस पदावली के प्रणेता रसतत्व मर्मज्ञ पं० श्रीकान्त शरणजी महाराज की सम्मतिः—

यह ग्रन्थ रत्न श्री 'द्वादश वाटिका विहार' शृङ्गार रस के भावनासिद्ध महान सन्त श्रीरामकिशोरशरणजी (कोठेवाले) महाराज का प्रणीत प्रकाशित हुआ है। यह परम सिद्ध महात्मा की वाणी है। आपने परम त्याग वृत्ति से आजन्म भावनात्मक साधना की है। अतः आप की वाणी में भारी प्रभाव है। मैंने आपकी निष्ठा देखी है। सत्संग से लाभ उठाये हैं।

आपकी निष्ठा आजन्म एकरस निबही है। अतः आपके शब्दों का सग्रह कर और उनको रसिकाचार्यों के उदाहरणों से सुशोभित कर प्रकाशन कराने में उनके परम कृपापात्र शिष्य श्रीशत्रुहनशरण ने भी बहुत अच्छे प्रयास किये हैं। अतः पाठक उनके अनुगृहीत रहेंगे।

यह श्रृङ्गार रस की रहस्यात्म वाणी सदा गोपनीय एव संरक्षणीय है।

विनीतः—
श्रीकान्तशरण, सद्गुरुकुटी
गोलाघाट, श्रीअयोध्याजी।

दि० २०-३-७२ ई०

* * *

श्रीजानकी चरितामृत के रचयिता, श्रीमिथिलाधाम निष्ठ, ऐकान्तिक रहस्य चिन्तक, स्वनामधन्य, श्रीरामसनेही दासजी महाराज की लिखित सम्मतिः—

जयतु जयतु शश्वन्मैथिली प्रेममूर्ति,
निरुपम गुण रूपा न्यस्तकान्तांसहस्ता।
अगति गतिरुदारा सच्चिदानन्द दात्री,
परम सरल चित्ता सुस्मिता नः शरण्या॥

विहाराख्येहि ग्रन्थेऽस्मिन् वाटिका द्वादशस्य च।
भावचित्रणमालोक्य चकितं मे भृशं मनः॥१॥
श्रृङ्गार भावना सिद्धिरीदृशी यस्य दृश्यते।
नमामि शतशः पाद पङ्कजे तन्महात्मनः॥२॥

महायोगी तपोमूर्ति हंस वृत्तिरतन्द्रितः ।
युग्म ध्यान विलीनात्मा भजतां स भवेद्गतिः ॥ ३ ॥
नाम सङ्कीर्त्तने जिह्वा ध्यानेसक्तं हि यन्मनः ।
अलोल नियमो योऽसौ भावसिद्धिं ददातु नः ॥ ४ ॥
श्रीमद्रामकिशोरादेः शरणान्तस्य सद्गुरोः ।
ग्रन्थोऽयं पठतां नित्यं भूयाद्भाव प्रसिद्धये ॥ ५ ॥
अप्रतिमं धनं सेव्यं रसराजावलम्बिभिः ।
ग्रन्थ रूपेण सम्प्राप्तं श्र किशोर्य्याः प्रसादतः ॥ ६ ॥
ग्रन्थ कर्त्तुरिदं हार्दं भावनासक्त चेतसः ।
मानसी भावना सिद्धौ सुमाहात्म्य प्रदं महत् ॥ ७ ॥
भाव स्वारस्य दायिन्या टिप्पण्या चानुरूपया ।
सह सम्पादितो ग्रन्थो येनायं तं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥
शुचि द्रव्येण यस्याभगाद् ग्रन्थः प्रकाशताम् ।
धन्यवादार्ह एवासौ रसिकानां प्रसादभाक् ॥ ९ ॥

अर्थात् इस प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीमहाराज जी द्वारा किये हुये द्वादश वाटिकाओं के विहार चित्रण को अवलोकन कर मेरा मन अत्यन्त चकित हो रहा है।

जिन कोठे वाले महात्मा श्री महाराजजी के श्रृङ्गारभाव की सिद्धि, इस प्रकार आश्चर्य रूपा दिखाई दे रही है, उनके श्रीचरण कमलों में मैं शतशः दण्डवत् करता हूँ।

जिनका हृदय श्रीयुगल सरकार से सदैव योग को ही प्राप्त रहा, कभी पृथक् हुआ ही नहीं, जो तपस्या की मूर्ति, हंस

के समान सारग्रहण शील, आलस्य रहित श्रीयुगल सरकार के ध्यान में सदा निमग्न रहे, वे गुरुदेव भक्तों को अपना आश्रय प्रदान करने की कृपा करें।

जिनकी जिह्वा सदा श्रीयुगल सरकार के नाम जप में और जिनका मन सदैव युगल स्वरूप के ध्यान में आसक्त बना रहा तथा जो अपने नियम में सदैव अडिग रहे, वे श्रीगुरुदेव भगवान् हम उपासक भक्तों को अष्टयाम सेवा की सिद्धि प्रदान करें। श्रीसम्पन्न सद्गुरु श्रीरामकिशोर शरणजी महाराज का यह द्वादश वाटिका विहार ग्रन्थ-रत्न नित्य पाठ करने वालों को भावना की पूर्ण सिद्धि प्रदान करें।

श्रीकिशोरीजी की कृपा से शृङ्गार भावावलम्बियों के लिये ग्रन्थ रूप में प्राप्त यह धन सदा सेवनीय है, क्योंकि यह ग्रन्थकर्त्ता श्रीमहाराजजी के हृदय का अनुपम धन, मानसी भावना सिद्धि के लिये महान सहायक होगा।

श्रीकोठेवाले महाराज अनन्त श्रीरसिक चूड़ामणि श्री-रामकिशोर शरणजी महाराज की समाधिभाषा में सुन्दर रस प्रदान करने वाली अनुरूप टिप्पणी के सहित, जिन्होंने इस ग्रन्थको संपादित कियाहै, श्रीमिथिलाधामीय विरौली महाराज श्रीशत्रुहन शरणजी महाराज को दण्डवत् करता हूँ।

जिनके पवित्र धन द्वारा यह ग्रन्थ रत्न प्रकाशित हुआ है, वे बड़भागी सज्जन, रसिक वैष्णव सन्तों तथा उपासकों के प्रसन्नताभाजन तथा धन्यवाद के योग्य हैं। विशेष क्या कहूँ ?

सभी सन्त तथा उपासकों का कृपाभिलाषी:-

चैत्र शु० तृतीया,
सं० २०२९ वि० | (श्री) रामसनेहीदास "लता"
१६, छावनी, साकेत।

सम्पादकीय-वक्तव्य

श्रीयुगल बिहार भावना रसास्वादी सज्जनों के वन्द्य करकंजों में अपने श्रीसद्गुरुदेव जू के दिव्य मानस से विनि-र्गत सुधाप्रवाह रूप यह श्रीद्वादश वाटिका विहार नामक प्रबंध समर्पित करते हुये हमें बड़ा ही हर्ष हो रहा है।

ग्रन्थ की पाद टिप्पणी में इस तुच्छ लेखनी द्वारा श्री-मद्वाल्मीकीय रामायण, श्रीवृहत्कौशल खंड, श्रीशिव संहिता, श्रीहनुमत्संहिता, श्रीवशिष्ट संहिता, श्रीसत्योपाख्यान रामायण श्रीअमर रामायण, श्रीमाधुर्य केलि कादम्बिनी, श्रीशृङ्गाररहस्य रत्न मंजरी, श्रीरुद्रयामल, श्रीमदग्रस्वामीजी कृत संस्कृत अष्टपाय, वात्स्यायन सूत्र, श्रीयुगल विनोद विलास श्रीसिया सनेह सुधानिधि, श्रीयुगल विहारिणीजीकृत दोहावली, श्री-आन्दोल रहस्य दीपिका, श्रीअवध सागर, श्रीयुगल विभूत प्रकाशिका, श्रीअशोक वाटिका विलास, श्रीअवध सागर, श्रीरस-मालिका, नित्यरास, श्रीकृपानिवास स्वामी कृत वर्षोत्सव तथा श्रीभावनामृत कादम्बिनी आदि ग्रन्थों के उद्धरण जुटा कर बन विहार सामग्री को एकत्र पुंजीभूत किया गया है।

ग्रन्थ के परिशिष्ट भाग में पाँच अध्याय रसिक रत्न श्रीविदेहजी शरणजी महाराज प्रणीत श्रीअशोक वाटिका विलास से उद्धृत किये गये हैं। उपर्युक्त आर्ष एवं अर्वाचीन स्तुत्य ग्रन्थों के मूल रचयिता के पादपद्मों में नतमस्तक होकर हम कृतज्ञता एवं आभार ज्ञापन कर रहे हैं।

श्रीरसमोदकुञ्ज, श्रीअयोध्याजी
श्रीरामनवमी
सं०२०२६ वि०

श्रीमती रसमोदलता पाद-
पद्माश्रित—
शत्रुहन शरण

❀ श्रीप्रमोदारण्य बिहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

❀ सर्वेश्वर्य्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

❀ श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः ❀

भूमिका

यस्यां भाति प्रमोद् काननवरं रामस्य लीलास्पदं,

यत्र श्री सरिताम्बरा च सरयू रत्नाचलः शोभते ।

ध्येया ब्रह्म महेशविष्णु मुनिभि र्ह्यानन्ददा सर्वदा,

साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा ।१।

प्रमुदवनविशाले चम्पकाशोक ताले

तरुण तरु तमाले पारिजाते रसाले ।

सरयुसरि सुकूले शोभिते सानुकूले

विहर सुरस पुञ्जे रासकुञ्जे मनो मे ।२।

श्लोकार्थः—नन्दन चित्ररथादि देव बनों को अपनी शोभा सम्पति से विनिन्दित करने वाले विपिन शिरोमणि श्री-प्रमोद बन जो श्री जानकी रमण के मधुर लीला स्थल हैं, वह श्री अयोध्या जी को विभूषित कर रहे हैं। सभी नदियों की अधीश्वरी श्री सरयू एवं श्री मणि पर्वत यहाँ की शोभा को विवर्द्धित करने वाले हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश तथा मुनिवर श्री अवध का निरन्तर ध्यान करते रहते हैं। शरीर से या मन से जो यहाँ बास करता है, उसे आनन्द सिन्धु में डुबोये रहती हैं। ऐसी ब्रह्म रूपा परात्पर धाम श्री अयोध्या विजय को प्राप्त हों ॥ १ ॥

हे मेरे रसग्राही मन, तुम्हें मैं दिव्य रस पान करने को स्थली बनाता हूँ। वहाँ रस पान लालसा से विहरते रहो। कभी तो तुम सुविशाल प्रमोद वन में रमना, कभी चम्पक और अशोक वनोंके हृदय में स्थित सरोवरों में श्रीलड़ैतीलाल जू की दिव्य क्रीड़ाएँ अवलोकन करना। कभी तरुण वृक्षों से सम्पन्न तमाल वनमें, कभी पारिजात वनमें, कभी रसाल वन में रमना। कभी श्रीसरयू पुलिन पर स्थित श्रीयुगल मनभावन जू के मनोनुकूल साज समाज से शोभायमान माधुर्यानन्द विवर्द्धक रस समूह से परिपूर्ण रासकुंज में विहरना ॥ २ ॥

❀ रागिनी सिंधुरा ❀

जय जय श्री वन प्रमोद रसिकन सुखदाई।
सरजु तीर दिव्य भूमि, बेलि लता रही झूमि,
फूलन प्रति भँवरा अति, गुञ्जत मन भाई।
कुञ्ज कुञ्ज प्रति अनूप, बिलसत तहँ जुगल रूप,
जनकलली रघुनन्दन, मधुर मधुरताई ॥
चन्द्रकला बिमलादिक, नागरी नवीनी अति,
मधुर जंत्र लीने कोइ, सप्त स्वर जमाई।
गावहिं सब दिव्यतान, सुनहिंलाल अतिसुजान
राग सरस भींजि मंद, मन्द मुसुकाई ॥

'अग्रअली' विपिनराज, यह सुख तहँ नित समाज
जानत कोउ रसिक भेद, जिन यह रस पाई ॥

❀ राग गौरी ❀

हमरे वन प्रमोद रस दानी ।
बिविध कुञ्ज द्रुम लता सुहावन, निरखत छवि मन मानी ॥
जोग ग्यान अरु नेम दान व्रत, इन सब की न प्रधानी ।
प्रेम लच्छना भक्ति सिरोमनि, चहूँ ओर सरसानी ॥
सरजू सोमविटप रतनागिरि, छवि नहिं जात बखानी ॥
'जुगल प्रिया' यह रस विलास पथ, संत कृपा ते जानी ॥

श्रीअयोध्या प्रमोदारण्य विहारी जानकी जीवन जू स्वयं निज दिव्य विहार स्थली अयोध्या का रूप धारण किये हुये हैं। धामी तथा धाम में अभेद है। श्रीवेद व्यास जी के प्रश्न पर जगद्गुरु भगवान् शंकर जी ने पुराण संहिता अध्याय ३३ श्लोक २८, २६, ३० में यही बात बताई है।

"आनन्दः परमं ब्रह्म स एव हि रसः स्मृतः ।
... .
नैकाकी रमते यस्माल्लीलाधिष्ठान सिद्धये ।
अनादिसिद्ध एवायं धाम रूपेण वै रसः ॥
नद्युद्न्वन्वनोद्यान रूपेणैव विजृम्भितः ।
वापी सरः सरिन्नाथ सरित्पल्वल दीर्घिकाः ॥"

अर्थात् आनन्दकन्द परमब्रह्म को ही रस कहा गया है। उस रस रूप पर ब्रह्म केलिये बिना विहार लीला की अधारभूता स्थली के रमण क्रिया नहीं बनती थी। अतः वही रसमय परम ब्रह्म अनादि सिद्ध धाम बन गया, जिस धामकी नदी, बन, उपबन, वापी, सर, सिन्धु, पल्वल, दीर्घिका आदि सभी साहित्य उसी रसमय ब्रह्म के ही रूपान्तर हैं।

उपर्युक्त संहिता प्रमाण के अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रतिपाद्य द्वादश उपवन भी उन्हीं रस रूप परात्परतम् ब्रह्म श्री-जानकी विहारी जू के प्रतिरूप हैं। ऐसा जानकर इन बनों के स्वरूप वर्णन के सिलसिले में रहस्य ग्रन्थों में, इनके जो कुछ अलौकिक दिव्य वैभव कहे गये हैं, उन्हें थोड़ा ही समझना चाहिये। सच तो यह है कि इन ब्रह्म रूप बनों के स्वरूप अनिर्वचनीय हैं, भावनागम्य हैं। कहने सुनने में जो कुछ आता है, वह आभास मात्र है।

प्रतिपाद्य द्वादश बनों का सामूहिक नाम श्रीप्रमोद वन है। श्री अपराजिता विहारिणी विहारी जू के दिव्य विहार में द्रुम-लता शैल सरोवर, खग मृग आदि वन वैभव केवल उद्दीपन विभाव मात्र ही नहीं हैं, प्रत्युत् युगल रसिक चूड़ामणि जू के बिनोद बिलास के निमित्त सर्वाधिक उपयुक्त क्रीड़ा स्थली भी यही हैं। श्रीप्रमोदारण्य अपने नामार्थ को चरितार्थ करते हुये रसिकजन जीवनधन युगल ललन जू को परममोद सुधा में परिप्लावित किये रहते हैं।

श्री वशिष्ट संहिता के नित्यधाम निरूपण विभाग में श्रीप्रमोद वन का बड़ा ही हृदय ग्राही वर्णन किया गया है। सेठ छोटेलाल पुस्तक विक्रेता, शृङ्गारहाट श्रीअयोध्याजी की दूकान में प्राप्य उपासना त्रय सिद्धान्त नामक ग्रन्थ के पृ० १५४ से पृ० १६० तक लगभग ७२ श्लोकों में यह वर्णन अवश्य पठनीय है। यह प्रसंग और भी कई जगह छपेहैं। इस छोटी सी भूमिका में उस विस्तृत प्रसंग की गुंजाइश नहीं है। श्रीवशिष्ठ संहिता के मत से द्वादश उपवन संवलित श्री प्रमोद बन की स्थिति श्री-अयोध्या नगर के बाहर श्री सरयू जी के उस पार बताई गई है। परन्तु हमारे पूज्यपाद प्रस्तुत पुस्तक प्रणेता, इनकी स्थिति श्री जानकीरमण जू के अन्तःपुर श्रीअवधपुरी के हृदयदेश में निर्देश करते हैं। दोनों मतों का समन्वय श्रीप्रमोद वन को द्विविध स्थिति मानने से हो जाती है। बात भी यही है।

रघुकुल गुरु श्रीवशिष्ठजी महाराज पंचायती बाहरी प्रमोद बन का बर्णन करते हैं और उतने ही बन, उसी नमूने के परन्तु उनसे भी परम मधुर मनोहर श्रीजानकी बिहारी जू के प्रमदावन के अन्तर्गत भी हैं। हमारे ग्रन्थकार जू का प्रतिपाद्य विषय महली प्रमोदारण्य हैं।

प्रस्तुत प्रवन्ध में जो श्रीप्रमोद बन के द्वादश उपवनों का वर्णन किया गया है, वह श्रीवशिष्ट संहिता के मत पर आधारित है। श्रीवशिष्ट संहिता में इन्हीं बारह बनों के नाम गिनाये गये हैं। हमारा दुर्भाग्य है कि श्रीनारदपंच रात्रान्तर्गत

हमारी श्रीसीताराम उपासना का यह परम प्रामाणिक आधार ग्रन्थ आज अप्राप्य सा हो रहा है। इस सुविशाल ग्रन्थ के जहाँ तहाँ प्रकाशित खंडांश पर ही हमें सन्तोष करना पड़ता है। यदि कोई अन्वेषी कहीं से पता लगा कर इन्हें श्रीसीतारामोपासना के केन्द्र स्थल श्री अवध के रसिक समाज के बीच प्रगट करें, तो उनका सम्पूर्ण समाज आभार मानेगा।

हाँ, तो श्रीवशिष्ट संहिता इन बनों के नाम इस प्रकार गिनती है—

"श्री शृङ्गार बनं भान्तं विहार वन मद्भुतम्।
तमालं च रसालं च चम्पकं चन्दनं तथा॥
पारिजात वनं दिव्य मशोकवन मुत्तमम्।
विचित्राख्यं वनं कान्तं कदम्बवनमेव च॥
तथाऽनंग वनं रम्यं वनं श्रीनागकेशरम्।
द्वादशैतानि नामानि वनानां कथितानि वै॥

अर्थ स्पष्ट है। इसीसे लेख का कलेवर अनावश्यक नहीं बढ़ाया गया।

श्रीसत्योपाख्यान रामायण अध्याय २० में भी बारह बनों के नाम गिनाये गये हैं। यथा—

पश्यध्वं देवताः सर्वे वनं चाशोक संज्ञितम्।
संतानकवनं चात्र मंदारवन मेव च॥
वनं च पारिजातानां चन्दनानां तथैव च।
चम्पकानां वनं दिव्यं यत्र यान्ति न षटपदाः॥

वनं रमणकं देवा रमणं यत्र वै हरेः ।
वनं प्रमोदकं चापि प्रमोदं यत्र भूरि च ॥
आम्राणां च वनं दिव्यं तथैव पनसैः कृतम् ।
कदम्बानां वनं दीर्घं केसरैरूपशोभितम् ॥
तमालानां वनं दिव्यं वल्लीभिः परिवेष्टितम् ।
वनान्येतानि रम्याणि संख्या तानि च द्वादश॥

इनमें चार पाँच नाम बदले हुये हैं। आम्र वन तो रसाल वन का नामान्तर है। तथा कदम्ब वनमें जो 'केसरैरुपशोभितम्' बता रहे हैं, सो नागकेसर वन तो पृथक् है। परन्तु दोनों के अति समीप होने से उच्च विमानारूढ़ विधाता को एक ही दीख पड़ता है। इसमें रमणक वन जो गिना रहे हैं, वह अनंग वन का ही दूसरा नाम है। पनस बन तो रसाल बन का ही उपभाग है। संतानक एवं मंदार वन भी पारिजात वन के उप-भाग हैं। श्रीवशिष्ट जी सूर्यवंश के पुरोहित श्रीअवध धाम के मर्मज्ञ हैं। इन्हीं के बचन प्रामाणिक मान्य हैं।

श्रीरुद्रयामलोक्त श्रीअयोध्या माहात्म्य अध्याय ३० के श्लोक ४८, ४९, ५० में जो बारह बनों के नाम गिनाये गये हैं, वे प्रायः सभी श्रीवशिष्ट संहिता से मिलते हैं। प्रेस की असाव-धानो से विचित्राख्य के बदले प्रमोदाख्य तथा अनंग के बदले अनंत छप गया है।

श्रीसिद्धान्त तत्व दीपिका के एकादश प्रकाश में बारह बनों

के नाम जो गिनाये हैं, सो श्री वशिष्ट संहिता का ही छायानुवाद है। श्री अवध सागर में बनों के और उपबनों के नाम इस प्रकार गिनाये हैं :-

*** छप्पय ***

वन अशोक संतानिक रमणक वन प्रमोदवन।
पारिजात मंदार हरित चन्दन केतकि वन ॥
आम्र कदम्ब तमाल वकुल ये द्वादश वन।
बृन्दा जूही लवँग मालती कुन्द कदलि वन ॥
वासन्ती मल्ली वर लता चम्पा केसरि सेवती।
एला ये उपवन कहे बिहरत जहँ नित दम्पती॥

उपर्युक्त उपबन श्रीअशोक बन के प्रथमाबरण में चारो ओर से स्थित हैं। यह मत श्रीहनुमत्ससंहिता रास पंचाध्यायी का है। श्रीअवध के सख्य रसावेशी दिव्य अनुभव सम्पन्न सिद्ध संत रत्न श्रीशील मणिजी महाराज अपने अष्टयाम मानसी सेवा नामक ग्रन्थ में कतिपय अभिनव वनों के नाम गिना रहे हैं। यथा—विनोद बन, रंगीन वन, उमंग वन, लवंग वन, मनोहर बन, सनेह वन, रसगेह वन, सुखाकर वन, सघन वन, अनुराग वन, विश्वास वन, पीयूष वन, मयूष वन, मयूर वन, मयंक वन, सुखमा वन, रसोल्लासी वन और मोह वन।

सच पूछिये तो श्रीअवधके विहारदेश में अनन्तवन उपवन हैं। जिन भावुक महानुभावों की दिव्य दृष्टि जहाँ पहुँची, वहीं लुभाकर रह गई और उसी स्थलका आपने वर्णन किया। अतः सभी नाम सही हैं। प्रारंभिक साधकों को श्रीवशिष्ट संहितोक्त प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्णित द्वादश बनों का ही ध्यान कर्त्तव्य है।

श्रीबृहत्कौशल खंड,वेदावतार श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण,
नारद पंचरात्र की विविध संहिताओं में महर्षियों के आप्त-
बचनों एवं आधुनिक रसिकाचार्यों की महाबाणियों से श्री-
अयोध्या विहारी के माधुर्यलीला प्रतिपादक रस साहित्य पर्याप्त
समृद्धमान् हैं। ऐसे रस साहित्य में यहाँ के विविध विहार बनों
के मनोरम वर्णन भी कम नहीं हैं। परन्तु है जहाँ तहाँ बिखरे !
उन सबों का सारांश प्रस्तुत ग्रन्थ में एकत्रित किया गया है।
इसके द्वारा रहस्य जिज्ञासुओं के लिये यहाँ के दिव्य वन वैभव
विषयक अनुसंधान केलिये एक परिष्कृत पथ प्रस्तुत किया गया
है। प्रस्तुत गन्थ के मूल बचन हमारे प्रातःस्मरणीय श्रीगुरुदेव
चरण का कृपा प्रसादहै। यद्यपि कुशल कवियों की भाँति काव्य
सौष्टव का इस रचना में प्राचुर्य नहीं हैं, पर है समाधि भाषा
में लिखित दिव्यदेश का सच्चा सन्देश। इसे पढ़ कर सहृदय
रसज्ञ भावुकों का हृदय ही नहीं, प्रत्युत् रोम रोम प्रफुल्लित हो
उठेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। रसिक समाज के लिये यह
अनुत्तम वन विषयक भाव सामग्री देकर आपने समाज का
महान उपकार किया है।

मूल बचनों के नीचे पाद टिप्पणी जोड़ी हुई है, इन
पंक्तियों के तुच्छ लेखक के द्वारा। पाद टिप्पणी में जो वनों के
आवरणों का विवरण बढ़ाया गया है, उसकी प्रेरणा मूलग्रन्थ
कर्त्ता जू की सूत्रात्मिका मौलिक महावाणी से ही मिली है।

श्रीग्रन्थकर्त्ता जू ने श्रीअशोक बन के विविध आवरणों
का तो विस्तृत वर्णन किया है, पर और बनों में आबरणों की
संख्या मात्र गिनाते गये हैं। प्रत्येक बन में द्रुम कुंज, लताकुंज
पुष्प कुंज आदि वताकर, इनमें भी श्रीअशोक बन की आवरण
पद्धति से ही आबरण क्रम सजा लेने का निर्देश कर रहे हैं।
अतः हमने उसी संकेत को चरितार्थ किया है।

जैसे श्रीअशोक वन में बृहत्सरोवर के मध्य पंचावरण विशिष्ट निज निवास महल पूज्य श्रीग्रन्थकर्त्ता जू ने वर्णन किया है, उसी भाँति प्रत्येक वन के मध्य भी सरोवर अन्तर्गत कुछ न कुछ विशिष्ट रचना होनी चाहिये। उस रचना का निर्देश रसिक मणि श्रीविदेहजा शरणजी महाराज ने स्वरचित श्री युगल बिभूति प्रकाशिका के पृ० ६२ से पृ० ७५ तक बड़े विस्तार से किया है। पाठक उस प्रसंग को अवश्य पढ़ें। यहाँ स्थानाभाव के कारण उस प्रसंग की कुछेक ही पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं।

'द्वादश उपवन छवि अतिभारी। कहैं कछुक समुझव विस्तारी
... ...

प्रति उपवन यक एक सरोवर। मध्य भाग में सोहत सुन्दर॥
मनि सोपान घाट चहुँ ओरी। बरनि न जाहि लेत चितचोरी
जल परिपूरन सुधा लजावन। सीतल मधुर स्वच्छ मनभावन
चहुँ घाटन पर वृक्ष मनोहर। लता लपटि जल परसत सुन्दर
कमल कुमुद फूले रँगचारी। जल खग भँवर सुधुनि सुखकारी
जलचर जाति अनेकन रंगा। प्रीति परस्पर विचरत संगा॥
चंदन के नौका बहुतेरे। नव रंग मनि के सुभग चितेरे॥
लम्बे चौड़े गोल सुहाये। खंभ बितान फरस छवि छाये॥
अलिन सहित चढ़ि प्रीतम प्यारी। खेलहिं तहाँ सुनाव नवारी
तिन्हसर मध्यसुभूमि विशाला। तामधि यकरगिरि सुरसाला
तापर आवन जान के हेतू। सर मधि चहुँदिसि बाँधे सेतू॥
... ...

गिरि पर चढ़न हेतु सोपाना। चहुँदिसि बने सोह रंग नाना

सिला शृङ्ग बहु कंदर खोहै। विविध जाति मृग पच्छी सोहै
अति सुन्दरबहु झरनाझरहीं।नालिन्ह होइ जलसर बिचभरहीं
लता गुल्म तरु जाति अनेका। चित्र विचित्र एक ते एका ॥
प्रतिगिरिपर सोभित समधरनी।बरनि न जाय सुभग मनहरनी
चित्र विचित्र पत्र फल फूला। साखा डारि प्रकांड समूला॥

तिन्ह वृच्छन के मूल में, वेदी सुभग रसाल।
अरु यक मंडप तासुपर, रचना विसद विसाल॥
ध्वजा पताका कलस बहु, वंदन फरस वितान।
द्वार हजारन्ह खंभ बहु, कुञ्ज वने छबिमान ॥

कुञ्ज २ प्रति पलँग विछाये। मध्य भाग सुख सौज सजाये ॥
मंडपमधि यक२सिंहासन। सहज कमलदल चहुँदिसिआसन
मध्य करनिका सोह मनोहर। तापर सेज बिछी बहु सुन्दर ॥
ता पर तकिया गेंद सुहावन। नील पीत कोमल मन भावन
अलिन सहित सियपिय तहँ रमहीं।
कोटिन रति मनमथ छवि हरहीं ॥
यहि विधि द्वादस उपवन गाये।··· ···· ···॥

हमने पाद टिप्पणी में जो प्रत्येक वन के मध्य में सरोवर तथा उनके मध्य में क्रीड़ा शैल आदि का वर्णन किया है, वह उपर्युक्त उद्धरण का हा सारांश है।

पाद टिप्पणी में आर्ष बचन एवं रसिकाचार्यों की महा-बाणियों का जहां तहाँ उद्धरण दिये गये हैं, वे मूल ग्रन्थ के भावों को सुबोध बनाने में सहायक होंगे। साथ-साथ मूल ग्रन्थ के निर्दिष्ट भावों के आप्त प्रमाण भी सिद्ध होंगे।

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठक जो कुछ उत्तमत्ता समझें, उसका श्रेय मूल ग्रन्थ के लेखक एवं उद्धृत महावाणियों के रचयिता महानुभावों को दें तथा जहाँ जहाँ दोष त्रुटियाँ परिलक्षित हों, उनका उत्तरदायी इस अल्पज्ञ अबोध अनधिकार चेष्टा की ढिठाई करने वाली तुच्छ लेखनी को जानें।

अन्त में हम परम गुरु निष्ठ श्रीनृपनन्दन शरणजी को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते, जिनके अथक परिश्रम के फल स्वरूप यह ग्रन्थ प्रकाश में आ रहा है।

जिनके गुप्त द्रव्यदान से प्रस्तुत ग्रन्थ रत्न का प्रकाशन कार्य सुसम्पादित हुआ है, उनको हम धन्यवाद क्या दें? उनका तो—

"गुरुवर कीरति विमल पताका।
दंड समान भयउ जस जाका॥"

इस ग्रन्थ को अनधिकारी के हाथ में न जानें दें। आप पाठकों के लिये हमारी मंगल कामना है—

"पढ़हिं सुनहिं अनुमोदन करहीं।
भववारिधि गोपद इव तरहीं॥"

श्री रसमोद कुञ्ज,
श्रीअयोध्याजी,
श्रीराम नवमी
सं० २०२९ वि०

श्रीमती रसमोदलता चरणानुजीवी
विनीतः—
शत्रुहन शरण

श्री जानकी रमण जू का आह्निक विलास

(अष्टयाम मानसिक भावना)

❀ दोहा ❀

श्री सतगुरु सिंगार रस, राचन मोदागार।
चरन कमल रज सीसधरि, वरनौं दिवस विहार ॥ १ ॥
'चन्द्रकला' अलि अवलिकी, गान वाद्य धुनिपाय।
जागे अनुरागे जुगल, सिय पिय मोद समाय ॥ २ ॥
नयन उनींदे लपपटे, वयन वदन पिय प्यारि।
महल मध्य परजंक पर, बैठे गर भुज धारि ॥ ३ ॥
मंगल कुञ्ज अधीश्वरी, सखि 'मंगला' सुजानि।
मंगलथार सँवारि करि, आर्रात करि हितदानि ॥ ४ ॥
कुञ्ज दंतधावनहि में, चौकी पर पधराय।
सखी 'शान्तिशीला' दई, दतुअन ललन कराय ॥ ५ ॥
बल्लभ भोग पवाय कै, मंजन कुञ्जहि ल्याय।
'मोद मंजनी' जू उबटि, मज्जन सविधि कराय ॥ ६ ॥
न्हाय ललन आये सहित, सखियन फागुन कुञ्ज।
'रंग मालिनी' जू रची, फाग केलि रस पुञ्ज ॥ ७ ॥
पुनि शृङ्गार सुकुञ्ज में, 'रंभा' जू सनमानि।
बृहत सिंगार सँवारेऊ, लालन को रुचि सानि ॥ ८ ॥
बहुरि कलेवा कुञ्ज में, 'ललित रोचना' आलि।
बालभोग करवायऊ, हस्त वदन पखालि ॥ ९ ॥

सभा कुञ्ज कुंजेश्वरी, अली 'भावली' नाम।
नाच गान कौतुकन सुख, लालन दीन्ह ललाम ॥१०॥

अली 'सुधाहस्ता' बहुरि, भोजन कुञ्ज लिवाइ।
सखिन सहित दोउ लालको, भोजन तृप्ति कराइ ॥११॥

दिन के शयन सुकुञ्ज में, आये रसिक सुजान।
'मदन मंजरी' तहँ रची, शयन मयन सुखदान ॥१२॥

'केलि कोविदा' केलि के, साज सकल सजवाय।
जहँ सन्ध्या लौं रमि रहे, ललन विविध सुखपाय ॥१३॥

बहुरि हिंडोल सुकुञ्ज की, 'विद्युल्लता' सयानि।
सावन सम झूलन सुरस, ललन दियो सनमानि ॥१४॥

'रास वर्द्धिनी' रास की, सामा सकल सँवारि।
रास विलास रमायऊ, बहु विधि प्रीतम प्यारि ॥१५॥

व्यारू की 'रुचि वर्द्धिनी' व्यारू सुरुचि कराय।
शयन कुञ्ज सुख पुञ्ज में, ललन दई पहुँचाय ॥१६॥

यहिविधि युगल विहारजो, ध्यावै सुरुचि सजाय।
महल माधुरी में पगे, लहि 'रसमोद' अघाय ॥१७॥

सूची--पत्र

❀ श्रीआचार्य्यायै नमः ❀

❀ श्री प्रमोद वन विहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

❀ अथ द्वादश बाटिका विहार ❀

❀ दोहा मंगलाचरण ❀

श्री गुरु चरन सरोज रज, सिर धरि वारहि वार।
बरनौं बाग विहार कछु, जथा बुद्धि अनुसार ॥१॥

बाग विहार का उपक्रम

❀ चौपाई ❀

एक समय सिय सह रघुनन्दन। बैठे कनकभवन मनि मंडन
चहुँदिसि मंडल सखिन विराजे। निजनिज सौंज लियेसब राजे
छत्र चमरकर व्यजन सुधारी। सेवहिं सखिन सरस पिय प्यारी
कोउ कर पान दान पिक-दानी। अतरदान कोइ लिये सयानी
वीन सितार तार कर लोई। लिय मृदंग मुहचंग सुकोई ॥
इहिविधि सौंज लिये सबठाढ़ी। लखि २ पिय प्यारी रति बाढ़ी

❀ दोहा ❀

पिय प्यारी मुख हेरि के, लोचन ताप सिराय।
अङ्ग अङ्ग उमगाय के, बोले मृदु मुसुकाय ॥२॥

सुनहु प्रिया मिथिलेशदुलारी। बाग विहार करन चलु प्यारी

तव अँग निरखि २ सुकुमारी। रंग उमंग बढ़्यो अति भारी
करहु सफल अभिलाष हमारी। तव अँग सिन्धु मीनमन चारी
सुनि पिय वचन उमगि सिय प्यारी। अंकमाल दै गलभुजडारी
चन्द्रकला सखि चतुर सयानी। जान लई सिय मनकी मानी
बोली चन्द्रकला मृदु वानी। सुनहु सखिन मम परम सयानी
निज निज यूथन करहु तयारी। बाग विहार सुसौज सुधारी

चन्द्रकला के वचन सुनि, निज निज यूथ सम्हारि।
बाग विहार सुसाज सजि, सजग भई सब नारि ॥३॥

तामदान रतनन सुठि सोहै। निरखत चन्द्र भानु दुति कोहै॥
सजि बैठे तापै पिय प्यारी। कोटिन रति मनमथ मद हारी
मनिन जड़ित सिविका बहुतेरी। तापै सोहै सखिन घनेरी॥
पहुँचे जाइ सुखद दोउ प्यारे। बाग रसाल कोट के द्वारे॥
घहरि उठी दुन्दुभी सुहाई। पिय प्यारी आगमन जनाई॥

पूजन सामा साजि के, * बागेश्वरी सुजान।
सखिन संग स्वागत कियो, युगल ललन सुखदान॥४॥

---

* श्रीमान् रसालवन की बागेश्वरी जू का शुभ नाम श्रीमती रसिकमंजरी जू है।

(श्रीरसमोद माधुरी पृ० १६, दोहा १४)

❀ अथ रसाल वन विहार ❀

❀ दोहा ❀

विधि विधान से पूजिकै, सखिन सहित सियनाथ।
लै आई निज कुंज में, सब विधि होय सनाथ ॥१॥
अर्घ्य पाद्य पुनि देइ कै, सिंहासन बैठाइ।
पुष्पमाल पहिराइ कै, भोजन विविध कराइ ॥२॥
पान मसालेदार पुनि, जुगल ललन मुखदेइ।
अतर सुघ्रान कराइ कै, करि आरति सुख लेइ ॥३॥
निज अनुचरियन साथ लै, नृत्य कियो गुन गाइ।
जुगल चन्दमुख निरखि कै, बहु विधि लेत बलाइ ॥४॥

❀ वार्त्ता ❀

अब श्रीरसालवन का स्वरूप वार्तिक में वर्णन करते हैं। श्री कनकभवन के दक्षिण दिशा वाले प्रधान फाटक से, जो सदर सड़क दक्षिण दिशा को गई है; उससे दाईं ओर को श्रीरसालवन है। चारो तरफ प्रथम कोट की दीवल नील-मणिमयी है। उस के ऊपर अनेक रंगों की मणियों से बेल बूटे चित्राम, जाल झरोखे इत्यादि बने हैं। उसमें चारों तरफ चार फाटक हैं।

इसके मध्य का अवकाश * पंच कक्ष (आवरण) करके युक्त है। प्रथम कक्ष से लेकर अन्त के कक्ष तक, नाना आकार प्रकार के कुंज निकुंज, त्रिविध रंगों की मणियों से खचित बने हैं। किसी स्थान पर लता कुंज, किसी स्थान पर द्रुम कुंज, किसी स्थान पर फूल कुंज बने हैं। इस तरह से अनेकों कुंज निकुंज बने हैं। कुंजों के अभ्यन्तर किसी के मध्य में तड़ाग, किसी में बंगला, किसी में वेदिका है; जो त्रिकोण, षटकोण आदिक भेदों करके अनेकों तरह की बनी हैं।

---

* प्रथम आवरण वाले अन्तराल के मध्य में श्रीसरयू धारा (नहर) लहरा रही है। इनके उभय कूल विविध मणि विचित्रित सीढ़ियों से मढ़े हैं। धारा में रंग विरंग के कमल खिले हैं। हंसादि जल पक्षी तैर रहे हैं। कमलों पर भ्रमर मड़रा रहे हैं। फाटकों के सामने मणिमय पुल बन्धे हैं। जल विहार के उपयुक्त विविध आकार की चन्दन अथवा मणिमयी नौकाएँ धारा में थिरक रही हैं।

श्रीसरयू धारा के दोनों पार इसी आवरण में विविध जातियों के आम्र वृक्षों के अनेक द्रुम कुंज बने हैं। इन आम्र वृक्षों पर—

"कोकिलै भृङ्गराजैश्च नाना वर्णैश्च पक्षिभिः।
शोभितां शतशश्चित्रां चूतवृक्षावतंसकैः॥"

(श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण ७। ४२। ८)

अर्थात् आम्र डालियों के अग्र भाग पर कोकिल, भृङ्गराज आदि नाना रंग के पक्षी चित्र विचित्र रूप से सुशोभित रहते हैं।

किसी बंगले के मध्य में पर्यंक बिछे हैं। चारों तरफ से अनेकों तरह की कुर्सियाँ लगी हैं। पर्यंकों पर कहीं रेशमी जाजिमें बिछी हैं, कहीं फूलों की रचना की गई है। उसके ऊपर तकिया गलतकिया, मसनद, धरे हैं। ऊपर चन्दोवे लगे हैं। उनके प्रान्त भागों में किंकणी लगी है। रेशम के गुच्छे लगे हैं। बगलों की खंभावलियों में नाना प्रकार की रचनाओं से पुतलियाँ बनी हैं जो सूत्रों के सहारे अनेक कलाएँ दिखाती हैं।

श्रीरसाल बन के द्वितीय आवरण में लताकुंज बने हैं। बासंती, सेवती, मालती, माधवी, यूथिका, मल्लिका आदि विविध जातियों की लताओं में प्रत्येक जाति के लताकुंज पृथक-पृथक बने हैं। कहीं लताओं के बंगले हैं, कहीं लता मंडप हैं। बीच-बीच में बावली, सरोवर आदि जलाशय नाना रंगों के कमलों से सुशोभित हो रहे हैं।

तृतीय आवरण पुष्प कुंजों का है। विविध जातियों के पुष्पों की पृथक-पृथक क्यारियाँ बनी हैं। क्यारियों के बीच में कहीं फूल बंगले, कहीं फूल मंडप, कहीं फूल चौक आदि बने हैं। विविध रंगों के सुगन्धित जल और इत्रों के फुहारे जलयंत्रों से ठौर-ठौर पर छूट रहे हैं।

चतुर्थ आवरण मणिमय कुंजों का है। इसमें द्वादश सेवा कुंज स्थित हैं।

पंचम आवरण के मध्य में इक्षु (ऊंख) रससे परिपूर्ण एक विशाल सरोवर है। सरोवर के मध्य में इन्द्रनील मणि का पर्वत है। पर्वत शिखर पर विशाल रसाल वृक्ष है। उसके नीचे रासवेदिका बनी है। सरोवर के चारों तटों पर नाना प्रकारके द्रुम हैं, जिनकी पुष्प फल के भार से झुकी हुई डालियाँ सरोवर जलको स्पर्श कर रही हैं। उन वृक्षों पर शुक सारिकादि पक्षीगण श्रीयुगल ललन जू के रस यश का गान कर रहे हैं।

नीचे की भूमि में नाना प्रकार की मणियों से रचना की गई है। उसके ऊपर रेशमी गिलम, गलीचे, कालीन और जाजिमें बिछी हैं।

खंभों और दीवारों के समीप चारों तरफ युगल-युगल पंक्तियों से मणिमय गमले सजाये हैं। उनमें कहीं कृत्रिम, कहीं स्वयं मधुर-मधुर गुल्म लगे हैं। उन पर छोटे छोटे पक्षी बैठे हैं। परस्पर कल्लोल कर रहे हैं। ऊपर टँगे मणिमय पिंजड़ों में अनेक जातियों के पक्षी पढ़ रहे हैं।

इसी प्रकार कुंजों के दालानों में भी विविध रचनाएँ बनी हैं। किसी भी बंगले या दालान में प्रवेश करते ही श्रीप्रिया प्रियतम जू के मन में प्रबल प्रेमावेश उद्दीप्त हो उठता है। रुक नहीं सकता।

इसी प्रकार से अनेक कुंजों में अनेक भेदों से विविध रचनाएँ श्रीप्रिया प्रियतम जू के सुख के निमित्त बनी हैं।

श्रीवशिष्ठ संहिता में श्रीप्रमोदवन के उपवनों में कहीं-कहीं बसन्त ऋतु की नित्य स्थिति बताई गई है। यथा—

"वसन्तो हि क्वचित्तत्र नित्यमेव विराजते ।।"

यही बात श्रीरसाल बन के लिये लागू है। अर्थात् यहाँ बारह मास बसंत बने रहते हैं। अतः देशी, देवगिरि, वैराडी, टोडिका, ललिता और हिंडोली नाम की अपनी छवों पत्नियों के सहित बसन्त राग यहाँ सखीरूप से नित्य निवास करते हुये श्रीयुगल किशोर जू की समयानुकूल परिचर्य्या करते हैं।

❀ बाग विहार ❀

बोली बैन सिया सुकुमारी । बाग विनोद करावहु प्यारी ॥
जहँ जहँ रचना बनी विचित्रा । कुंज निकुंज मनोहर चित्रा ॥
तहँ तहँ सैर करावहु स्यानी । प्रीतम सँग मेरे मन मानी ॥
सुनि सिय बैन मनोहर मीठे । अँगअँग पुलक भरे अति तूठे
करि प्रनाम बोली अलि बैना। चलिये जुगल ललन मम नैना
उठे पिया प्यारी सह सखियन । दै गलबाँह चले प्रमुदित मन
प्रथम गये पुष्पन के कुञ्जन । रचना देखि भये मन रंजन ॥
कुञ्जेशा सह अनुगत बालन । सहित लाड़ पूजे दोउ लालन
फूलन के शृङ्गार बनाये । पिय प्यारी अंगन पहिराये ॥
ता पाछे सखियन के अंगन । फूल सिंगार सजे नव रंजन ॥
फूलन के बंगले अति सोहन । ता मधि फूल सेज मनमोहन ॥

बहु बिधि फूलन सेज पर, करि विहार दोउ लाल।
जाल झरोखन ते निरखि, सखियन होत निहाल॥

करि विहार निकसे पिय प्यारी। रस मद मत्त फिरै फुलवारी
विविध रंग फूलन की क्यारी। बिच बिच रौसें सुघर सम्हारी
फूल तोड़ि पिय गुच्छ बनावत। प्यारी जू को घ्रान करावत॥
यहिविधि फूलन कुंजविहारी *द्रु मनकुञ्ज गय सहित पियारी
वेदी परम अनूप सुहाई। तापै बैठे सिय रघुराई॥

मनोज्ञं डोलनं कुंजं ययौ राम सह प्रिया।
बसंत रंगिनी यत्र वसन्ति परम हर्षिता॥
वसन्त कुसुमैर्यन्तु वेष्टितं परमाद्भुतम्।
कोकिलादि गणैर्युष्टं काम संदीपकारकम्॥
(श्रीहनुमत्संहिता पंचाध्यायी ५। ४६, ४७)

अर्थात् श्री युगलकिशोर जू मनोहर डोल कुंज में पधारे। यहां की कुंजेश्वरी श्रीवसन्त रंगिनी जू बड़े सुख पूर्वक रहती थीं। यह कुंज वासन्ती पुष्पों से सुसज्जित था, तथा यहां कोकिलादि पक्षीगण कामोद्दीपक कलरव कर रहे थे।

अतः श्रीरसाल बन के पुष्प कुंजों में फूल डोल उत्सव की भी भावना की जा सकती है।

* प्रथमावरण में स्थित श्रीसरयू धारा के दोनों पार रसाल वृक्षों के विविध भांति के द्रुम कुंज बने हैं। यह पहले ही कह

आये हैं। प्रस्तुत द्रुम कुंज विहार यहीं का समझना चाहिये, बाग विहार में कोई क्रम की पावन्दी नहीं है कि एक ओर से ही विहार होता चले। अतः पहले तृतीयावरण वाले पुष्प कुंज से विहर कर, अब यहाँ पधारे हैं।

वसन्त समयोचित दोलोत्सव इन रसाल द्रुम कुंजों में भी होता है। यथा—

आम्रे निवद्धा विधिना विधाना-
　　　　दोलां महारत्न चयाभिवद्धाम्।
विज्ञात सीता हृदयः सखीनां-
　　　　नेत्राम्वुजैः सोथ सहारुरोह॥
सौदामिनीवांवुद रम्य रूपे-
　　　　रामेभिरामे जनकत्मजा सा।
विद्योततै स्म स्फुरदङ्गभूषा-
　　　　चित्राम्वरा चित्र बचोङ्ग नेत्रा॥

(श्रीबृहत्कौशल खंड उत्तरार्द्ध १०।२६,३०)

अर्थात् आम्र की शाखा में महारत्न समूह का दोला विधि विधान से बंधा है। श्रीमैथिली जू के हृदय भाव को समझ तथा सखियों के नयन संकेत पाकर श्रीप्रियतम जू प्रिया जू सहित उस पर विराज गये।

ज्योतिर्मयभूषण एवं चित्र विचित्र वसन से अलंकृत, चमत्कृत बचन, अंग एवं नयन वाली श्रीजनकात्मजा जू श्री-प्रियतम जू के साथ कैसी फव रही हैं, जैसी परम रमणीक श्यामघन में सौदामिनी विलस रही हो।

बाजन लगै बहुत बिधि बाजैं। तान सुरीली लेत अवाजैं ॥
कोइ सखि नृत्यत तानमिलाई। पिय प्यारी दिसि भाव बताई

हिंडोल रागेण मनोरमेण गन्धर्व कन्याश्वजगुः प्रियं तम्।
ता राजकन्याः कलयां बभूवु र्दोलां शनै र्विस्तृत रत्नदीप्तिम्॥
कन्या वरांग्यो वरकिन्नराणां पत्युः पुरस्तान्ननृतुर्यथोक्ति।
विद्याधराणां तनयाश्च वाद्यान्प्रवादयन्नीति पथे प्रविष्टाः ॥
(श्रीवृहत्कौशल खंड १०। ३१, ३२)

अर्थात् श्रीजानकीकान्त जू को दोला पर विराजमान देखकर, गन्धर्व कन्याएँ मनोरम हिंडोल राग से गान करने लगीं। रत्नों से अति दीप्तिमान् हिंडोल को राजकन्याएँ धीरे धीरे झुलाने लगीं।

मनोहर अंगों वाली किन्नर कुमारियाँ श्रीप्राणप्रियतम जू के आगे संगीत रीति से नृत्य करने लगीं तथा संगीत रीति में प्रवीण विद्याधर बालाएँ वाद्ययंत्र बजाने लगीं।

प्रत्याम्र वद्धा मणिराजवद्धा दोला विलोलायत लोचनास्ताः।
परस्पराज्ञात परानुभावाः साकं प्रियेणारुरुहुश्च रामाः ॥
अत्रापि गन्धर्व कला प्रभावाद्रामस्य रूपप्रतिबिंबितानि।
तथ्योपपन्नानि सुखावहानि स्वेच्छानुरूपाणि च निर्ममाणि
(श्रीवृहत्कौशल खंड १०। ३७, ३८)

*** दोहा ***

नृत्य गान बहु भेद से, करि बिहार द्रुम कुंज।
लता कुंज आये सखी, पिय प्यारी सुख पुंज॥

अर्थात् प्रत्येक आम्र वृक्ष में मणीन्द्रों का देला पड़ा है। मनोरमाएँ एक एक पर श्रीप्रियतम जू के संग में बैठकर झूल रही हैं। प्रत्येक ललना यही जानती हैं कि प्रिय मेरे ही साथ झूल रहे हैं, अन्य के साथ झूलना इसे जान नहीं पड़ता है। यहाँ गन्धर्व कला प्रभाव से श्रीकौशलेन्द्रकुमार जू अमित रूप बनाये हैं। आपका प्रत्येक रूप यथार्थ है। कोई भ्रम की बात नहीं है। अपनी इच्छा से सबको सुख दे रहे हैं।

बसन्त कालीन दोलोत्सव का प्रमुख स्थल श्रीरसालबन ही है, यह आर्ष ग्रन्थ श्रीवृहत्कौशल खंड के उपर्युक्त उद्धरणों से भली भांति स्पष्ट हो गया। अन्यान्य रसिकों ने भी रसाल-बन के दोलोत्सव का वर्णन किया है। यथा—

झमकि झुकि झूलत अवध किशोर।
आम की डार में पर्‌यो हिंडोरा, रेशम लागी डोर।
सुन्दर बन प्रमोद सरयू तट, बोलत दादुर मोर॥
अवध छबीले पेंग बढ़ावैं, बसन उड़त झकझोर।
'मोहनि अली' चमर कर लीन्हें, निरखत छवि तृण तोर॥

*** चौपाई ***

कुंजनिकुंज निरखि दोउ जोरी। दसरथनन्दन सुत जनककिसोरी
गलबाहीं दीन्हें सिय प्यारे। मनिन कुंज आये छवि न्यारे
नाना रंग अनूप सुहाई। बिबिध भाँति करि जतन बनाई॥
कोइ पचखंड सप्त खंड कोई। कोइ नव खंड बने छवि जोई
मनिमय वँगले मधि अति सोहै। जगमगाय दुति फैलि रहोहै
ता मधि रतन सिंहासन राजै। देखत भानु किर्ण अति लाजै
ता पर बैठे राजदुलारे। सिय प्यारी अंसन भुज धारे॥
चहुँदिसि सखी बिराजत रूरी। छवि छकि २ छन २ तृन तूरी
पिय बहुविधि मुद्रा दिखलावहिं। कोककारिका कहि समुझावहिं

रसालबन के वसन्तोत्सव के लिये श्रीवृहत्कौशल खंड चौदहवें अध्याय के श्लोक ११४, ११५, ११६ भी देखिये। स्थानाभाव से यहाँ सब उद्धृत नहीं हो सके।

महर्षि वात्स्यायन के सूत्र १।४।२८ में जिस सहकार भंजिका क्रीड़ा का उल्लेख हुआ है, उस क्रीड़ा के उपयुक्त भी यही श्रीरसाल बन है।

श्री रसाल बन की भावना करने वाले साधकों के लिये निम्नोद्धृत छंद भी अनुशीलनीय है—

※ दोहा ※

बहु बिधि केलि विनोद करि, बन रसाल सिय नाथ।
बन तमाल की सुरति करि, चले सखिन के साथ॥

※ कुण्डलिया ※

सालत बिरहिनि हिय चटक, बन रसाल छवि पुञ्ज।
मान छुड़ावन हित जहाँ, भँवरि दूतिका गुञ्ज॥
भँवरि दूतिका गुञ्ज पुञ्ज सखि कलकल रव है।
पिय प्यारी की रहस सेवि रितुराज सु छव हैं॥
छुटत मोहिनी मान सु 'प्रेमप्रभा' जहँ पालत।
जो निज सहज सुभाव, आइ विरहिनि हिय सालत॥
रसिकेश श्रीपुरुषोत्तमशरण बिरचित श्रीसिया सनेह सुधानिधिसे।

※ दोहा ※

आलय रहस रसाल बन, रस रसराज सुसाज।
स्वादी आजादी सुजन, लेत सुस्वाद समाज॥
(श्रीयुगलविहारिणीजी कृत दोहावली से)

ऊपर जिन वासन्ती क्रीड़ाओं के वर्णन हुये हैं, उनके अतिरिक्त श्री रसाल बन में फाग विनोद भी होता है। यथा—
वसन्त गीतै र्ललितानुवन्धैः प्रहृष्यमाणौ मधुरै र्मनोज्ञैः।
नवं नवं चक्रतुरीड्यमानौ विराजमानौ निपुणं विनीतौ॥

(पाद टिप्पणी का शेषांश)

वासन्तिकीं चाकुरुतांसुलीलां ताभिः सखीभिःसह कामिनौ।
नाना विधै र्गन्ध सुगन्ध चूर्णैं रासेचतै हैम मणीन्द्र जातैः॥

(श्रीवृहत्कौशल खंड १०।३५।३६)

अर्थात् श्रीप्रिया प्रियतम जू मनोरमाओं से अभिवन्दित होते हुये श्रीरसाल बन में विराजमान हैं। ललनाएँ मधुर मनोज्ञ बसंत राग को ललित ताल विधान से गाकर आपको प्रसन्न कर रही हैं। आप दोनों नव नवायमान क्रीडोल्लास द्वारा सबको सुख दे रहे हैं।

श्रीलाड़िलीलाल जू उन सखियों के साथ बसन्त लीला करते हुये नाना प्रकार के सुगन्धित रंग स्वर्ण मणिमय पिचकारी में नायिकाओं पर तथा परस्पर में भी छिड़कते हैं तथा सुगन्ध चूर्ण (गुलाल) डाल रहे हैं। इसके अतिरिक्त वात्स्यायन सूत्रं १।४।२७ में निर्दिष्ट 'सुवसन्तकः' संज्ञक उत्सव भी श्रीरसाल वन के पंचमावरण वाले इन्द्र नीलमणि शैल शिखर स्थित रास स्थली में मनाया जाता है

॥ इति श्रीरसालबन विहार वर्णन ॥

❀ अथ श्रीतमाल बन विहार ❀

(वार्तिक)

❀ तमाल बन का स्वरूप वर्णन ❀

— ❀ —

प्रथम कोट चारो तरफ श्याम मणिमयी दीवालें हैं। उन पर बिविध रंगों की मणियों के बेल बूटे, जाल झरोखे बने हैं। दीवालों पर नाना प्रकार के चित्राम बने हैं। यह कोट महल नव तल्ले तक ऊपर को गया है।

कोट के चारों तरफ चार फाटक हैं। फाटक की रचना अति विचित्र बनी है।

नायक नायिका के पारस्परिक सम्प्रयोग सुखाधिक्य आस्वादन करने का अधिक उपयुक्त समय रात्रि ही है। श्रीलाड़िलीलाल जू विशेष रसाविष्ट होने पर चिरकाल व्या-पिनी रजनी की आकांक्षा करते हैं। इस भाव को सुस्पष्ट करने के लिये रसिकाचार्यों की कतिपय महावाणियाँ उद्धृत की जाती हैं।

रस विलसत पीतम सुखहिं, चिर निसि चाह प्रवीन।
चन्द्रकला चन्दहिं निरखि, मधुर जंत्र सुर कीन॥

—श्रीनेह प्रकाश

कोट के बाहर प्रान्त भाग में चारों तरफ युगल दो
करके वृत्तावली लगी है

(श्रीतमाल बन के अभ्यन्तर सात आवरण हैं)

हे सखि बार बार कहों तोसे रजनी,
रहो थिर वेगि सुघर जिन जावो टर।
अपने श्याम सँग रंग रस वस रहि,
तोरी ढरनि लखि लागे जिय डर॥
ससि की सताई किधौं रवि की बुलाइ माइ,
जात विहाइ किधौं काज बड़ो घर।
'कृपानिवासी' सिया लाल लालची,
रैनि निहोरी देइ माल गर॥

※ राग कालंगड़ा ※

"राघवजी काई जाय छै प्यारी जामिनी।
राज म्हासों रंग मानों हँसि गर लागनो।
दिन दुरजन सों लागत हियरे।
कन्त बिछुरि झरि कामिनी।
नीकी लागत आवत रजनी।
फीकी लागत गामिनी॥
'कृपानिवास' श्री राम रसिक सों।
रस वस बोलत स्वामिनी॥"

सातों आवरण के मध्य में अनेक प्रकार के कुंज निकुंज बने हैं।
कुंजों के मध्य मे यथा स्थान कहीं तड़ाग, कहीं बावली, कहीं
वितर्दी, कहीं कृत्रिम, कहीं स्वयं वृक्षों की अवलि बनी है। कहीं
लता कुंज हैं, लता बँगले हैं, इत्यादिक रचनाएँ बनी हैं।

"जानकी रघुनन्दन मन भावति भई रैनि ब्रह्म।
'रामचरण' सर्व जीव परमानन्द पाई ॥"

श्रीयुगल रसिक जू की रसमयी आकांक्षा के अनुरूप
श्रीतमाल बन में निरन्तर रात्रि की स्थिति बनी रहती है। इस
बन में कभी दिन का भान होता ही नहीं। यथा—

"तामालकुल वीथिभि र्दिवसेऽपि कुहूरिव"
(श्रीशिव संहिता ५।५४)

अर्थात् तमाल वृक्षों की सघनता से बनबीथी में दिन
के समय भी अमावस्या की रात्रि प्रतीत होती है। पुनः—

"प्रकाशैः पुष्प जातीनां राकेवासौ दिवानिशम् ॥"
(श्रीशिव सं० ५।५२)

अर्थात् जूही चमेली के शुभ्र प्रकाश से किसी आवरण
विशेष में दिन रात पूर्णिमा रात्रि का भान होता है।

श्री तमाल बन के सातों आवरणों का विवरणः—

प्रथम आवरण की भूमि धुन्ध मणिमयी है। इसी आवरण
वाले अन्तराल के मध्य में श्रीसरयूजी की धारा बहती है।
इस धारा के उभयकूल श्याम मणिमयी सीढ़ियों के मढ़े हैं।

एक-एक कुंज में अनेक सखियाँ रहती हैं। कुंजों में अनेक तरह के पक्षी कलरव करते रहते हैं।

दालानों के दरवाजों में विविध रंगों के परदे पड़े हैं। किंकणी, लट्टू, जाली शोभा दे रहे हैं। इसी तरह से अनेकों रचनाओं से युक्त हैं।

धारा के दोनों ओर तमाल वृक्षों की सघन पंक्तियाँ लगी हैं। इससे इस आवरण में सदैव अमावश्या की रात्रि की भाँति निविड़ अन्धकार छाया रहता है।

इस अन्धकार की ओट में श्रीयुगलविहारी निशंक सम्प्रयोग सुख लूटते हैं। यथा –

सघन कुञ्ज की ओट में, मिलन भई रस काज।
ससि वदनी कहु क्यों छिपे, लखु दृग झलकत लाज॥
लखु दृग झलकत लाज, नाज नूतन सो आई।
नवल अंग नव मिलन विरह नव अगिनि बुझाई॥
धनि तमाल पिय लता धन्य या सुछवि पुञ्ज की।
'प्रेमप्रभा' रस अकथ मोहिनी सघन कुञ्ज की॥

श्रीसिया सनेह सुधानिधि –

(प्रथम आवरण के विनोद विलास परिचायक निम्नोद्धृत पद पढ़ें।

पिय प्यारी दोनों दीन्हें गल बहियाँ।
सरयू तीर तमाल कुञ्ज में, सुखदायक छहियाँ॥

❋ तमाल बन बिहार, दोहा ❋

बन तमाल की पौरि पर, सखियन युत सिय लाल ।
आय निहारे कोट छवि, रचना लखत विशाल ॥
सखी नगारे चोप दइ, शब्द कुञ्ज प्रति छाय ।
आय मिली वागेश्वरी, ❋ सखियन युत पिय धाय ॥
जुगल ललन परनाम करि, सखिन मिली अँकवार ।
पट पाँवड़े बिछाय कै, लै आई निज द्वार ॥

❋ यहाँ की वागेश्वरी श्रीमती कनकलता जू हैं ।

मंद मंद मुसकाय परस्पर, बतिया सुख महियाँ ।
'मधुरअली' त्रिभुवन में देखी, ऐसी छवि नहियाँ ॥

दै गलबाहीं झुलैं दोउ आज ।
सरयू तीर तमाल कुञ्ज में, जनकलली रघुराज ॥
काह कहैं सखि कहत बनै ना, कोटिन सुख को साज ।
'मधुरअली' सब तजि सँग झुलिहैं, छाड़ि लोक कुल लाज ॥

द्वितीय आवरण का कोट महल नील मणिमय हैं । श्याममणि के कृत्रिम तमाल वृक्षों की सघन पंक्तियाँ लगी हैं । नीचे की भूमि धुन्ध मणि मयी हैं । बीच बीच में सरोवर बने हैं । इन में नील कमल खिले रहते हैं । इस आवरण में प्रथम आवरण की अपेक्षा कुछ कम अन्धकार रहता है । यहाँ भी सदैव रात्रि की प्रतीति होती है ।

*** चौपाई ***

करि पूजा बहु विधि सेवकाई। बहु व्यंजन भोजन करवाई॥
कुञ्ज निकुञ्ज दिखावन लागी निरखि २ सिय पिय रस पागी
अरस परस अंसन भुज धारे। रोसन पर विचरत दोउ प्यारे॥
देखत चंपकली जब प्यारे। करज पदज सिय केर निहारे॥
देखत फूल गुलाबन केरे। सिय करतल तब दै चित हेरे॥

तृतीय आवरण का कोट महल हरित मणिमय हैं। पीत रंग की मणियों से जटित भूमि पर सोन जूही आदि पीत पुष्प वाली लताओं से परिवेष्टित तमाल वृक्षों की पंक्तियाँ सुसज्जित हैं।

तमालानां वनं दिव्यं वल्लिभिः परिवेष्ठितम्।
(श्री सत्योपाख्यान रामायण २१।२४)

अर्थात् तमाल वन के तमाल द्रुम लताओं से परिवेष्टित हैं। बीच बीच में तालाब बने हैं, जिन में नील पीत कमल खिले हैं। यहाँ भी हलके अन्धकार की रात्रि बनी रहती है।

"विपिन तमाल तमाल तर, स्याम तमाल सुदेखु।
सोनजुही लतिका सरिस, नागरि छबि अवरेखु॥
नागरि छवि अवरेखु, रेख खिंच ले हियरा में।
सोनजुही सी सिय तमाल पिय लगि गरवा में॥
उरझि रही रसरंग अंग अंगन शोभा फवि।
'प्रेम प्रभा' छहराति मोहिनी अकथ अगमकवि॥

देखत रंभ खंभ अति नीके। सिय ऊरु के आगे फीके ॥
देखत कमल कली स्थूले। सीय अंग सम नाहिन तूले ॥
देखत श्री फल रुचिर बड़ेरे। सिय उरोज दिसि हँसि २ हेरे॥
श्री फल की मनोज्ञ कठिनाई। पै ऐसी रुचिराइ न पाई ॥
देखत मीन कंज अरु खंजन।प्रिया नयन सम नहिं रस रंजन
लता द्रुमन पर नागिनि झूले।प्यारी कवरी सम नहिं तूलै॥

इहि विधि रौसन रौस पर, प्रिया संग सिय नाह।
कुञ्ज निकुञ्जन में फिरे, आये बंगले माह ॥

चतुर्थ आवरण में लता कुंज हैं। बीच बीच में बापी दीर्घिका बनी हैं। कहीं लता के मण्डप, कहीं लता बंगले बने हैं। यहां भी हलके अन्धकार की रात सी प्रतीत होती है।

"वन तमाल लतिका ललित, ललना गन कर केलि।
करहिं विविध विधि सुखअवधि, सुकृती सुकृतसकेलि॥
(श्रीयुगलविहारिणि जू रचित दोहावली)

*** दोहा ***

बहु विधि मोद विनोद मय, करत इहाँ दोउ केलि ।
द्दग भोगी अलियाँ छकीं, तत्सुख रेलम रेलि ॥
पुनि सिंगारे सखिन सब, नवल सिया पिय साथ ॥
रुचि पावन आरति कियो, बहु बिधि भई सनाथ ॥

*** चौपाई ***

चढ़ि सुखपाल सिया सुत प्यारे ।चंपक बन विहरन चित धारे

॥ इति श्रीतमाल वन विहार ॥

पंचम आवरण पुष्प कुंजों का है । श्वेत पुष्पों की क्यारियों के बीच बीच में नाना आकार के जल यन्त्रों से इत्रों के फुहारे छूटते हैं । चन्द्रमणि मयी भूमि है । यहां पूर्णिमा की रात सी सदैव ज्योत्स्ना छाई रहती है।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुंजों के उपयुक्त मणिमय बंगले आदि बने हैं।

सातवे आवरण के मध्य में कस्तूरी मिश्रित श्याम जल से परिपूर्ण विशाल सरोवर है। सरोवर के मध्य में श्याम-मणिमय क्रीड़ा पर्वत है। पर्वत श्रृङ्ग पर विशाल तमाल वृक्ष है। उसके नीचे रास चत्वर बना है। रास स्थली के चारो ओर पर्यंक सज्जित अनेक निकुंज बने हैं।

❁ अथ चम्पक वन विहार ❁

❋ वार्ता ❋

प्रथम कोट पीत मणिमय दीवाल है और बिबिध रंगों की मणियों से अनेक रचनाएँ बनी हैं।

यह कोट महल नव खंड ऊँचा है। सब खंडों में नील हरितादि मणियों से विभिन्न रचनाएँ की गई हैं।

यह वन श्री दन्तधावन कुंज और स्नान कुंज से पश्चिम है। यहाँ की वागेश्वरी श्रीमती रूप गर्विता जू हैं।

श्री कौशलेन्द्र कुमार जू स्वयं ही श्री तमाल बन का रूप धारण किये हुये है। उसी प्रकार श्रीमिथिलेन्द्र राजदुलारी जू स्वयं चम्पक बन बन गई हैं। आप के श्री अंगों में भी पुष्प वाटिका की कल्पना रसिकाचार्यों ने की है। यथा —

सिय भइ सुभग मदन को बाग।
सुमन वाटिका परम मनोहर, ताको मनहुं सोहाग ॥
रूप वसन्त मृदुल कर पल्लव, भुज बल्लित की लाज ॥
नयन कमल जंघा रंभा सी, महक मनहु अनुराग ॥
देखि राम मन भँवर लुभाना, अलख प्रेम रस पाग।
नाभि बहुत गंभीर सरोवर, जहं दुइ हंस बिभाग ॥
पीत वसन परिखा जनु सोहत, भूषन ध्वनि खग बाग।
सिया राम को ताग जुरत ही, भाग 'देव' को जाग ॥

(श्रीकाष्ठ जिह्व स्वामी कृत श्रीजानकी विन्दु)

दालानों के भीतर अनेक चित्राभ बने हैं। दरवाजों में ताश बादला, कमखाव आदि अमोल जड़ाऊ वस्त्रों के परदे पड़े हैं। दालानों के भीतर कहीं कुर्सी, कहीं पर्यंक, तोशक, तकिये से सजे बिछे हैं। ऊपर छत में जरकसी चन्दोवे लगे हैं। कलश कंगूरों पर कृत्रिम मोर, कबूतर, शुकादि की माला बैठी हैं।

सीता प्रतीकोज्ज्वल वाटिकायां भृङ्गो महाराज किशोरकोऽयम्।
दिव्याङ्ग पुष्पासव पान मत्तो विधूर्ण दृष्टि र्मुदमातनोति॥
श्री माधुर्य केलि कादम्बिनी श्लोक ५७।

अर्थात् श्री मिथिलेश राजकिशोरी जू का श्रीविग्रह ही उज्ज्वल अर्थात् शृङ्गार रसमयी वाटिका। श्रीअवध किशोर जू ही इस वाटिका के रसलोलुप भ्रमर हैं। दिव्याँग रूपी पुष्पों के छवि मकरन्द पीकर मतवाले ।आप के रसछाके नयन घूमते हुये परमानन्द का विस्तार कर रहे हैं।

"श्री वन मनही मन में भावत।
कहत न बनत बनत वह देखत, कोउ सुकृती रस पावत॥
रंग रंगीले फूल सिया मय, मधुकर प्रेम बढ़ाबत।
भासत देखि कुंज की अन्तर, सिया चली जनु आवत॥
कबहुं केसरिया कबहुं चूनरी, कबहुं नील लहरावत।
कबहुं गुलाबी मँहकत पट छवि, कुंजन में दरसावत॥
जेहि कारन जप तप को साधत, घर तजि मूड़ मुड़ावत।
याको देखत सोइ 'देवता' अनायास उर छावत॥
(श्री जानकी विन्दु)

इसी प्रकार पाँचों कोटों की रचना जानो । मध्य मध्य के अवकाशों में अनेक कुंज निकुंज बने हैं। मध्य के भाग में पूर्वोक्त नाना रचनाएँ बनी हैं।

प्रथम आवरण के मध्य अवकाश में श्री सरयू धारा है। धारा के दोनों ओर चम्पाकेला का कदलीबन है। उसमें कदली द्रुम के ही कुंज निकुंज बने हैं।

द्वितीय आवरण में कई जातियों के चम्पकों के पृथक् पृथक् कुंज बने हैं। बीच बीच में पीत कमल से परिपूर्ण सरोवर, पीत मणि बद्ध घाटों से सम्पन्न बने हैं।

तृतीय आवरण में चम्पक लता कुंज हैं। बीच बीच में पुष्प करणियाँ बनी हैं।

चतुर्थ आवरण में द्वादश सेवा कुंज है। सेवा कुंजों की दीवालों पर चम्पक द्रुम, चम्पक लता के चित्राम ऐसे बने हैं; जिससे वहाँ भी बन के दृश्य का भान होता है।

पंचम आवरण में चम्पक इत्र से परिपूर्ण विशाल तड़ाग हैं। तड़ाग के बीच पीत मणिमय पर्वत हैं। उस पर विशाल चम्पक वृक्ष है। वृक्ष के नीचे रास वेदिका बनी है।

चम्पकानां बनं दिव्यं यत्र यान्ति न षटपदाः ॥

(श्री सत्योपाख्यान रामायण २० । २१)

अर्थात् श्रीप्रमोदवन के अन्तर्गत्त दिव्य चम्पक बन हैं। इसमें अन्य भ्रमर का प्रवेश नहीं है। इसके रसभोक्ता एक मात्र श्रीराम भ्रमर है।

पहुँचे कोट द्वार दोउ जाई । सजि सामा वागेश्वरि आई ॥
करि पूजा सनमान बहोरी । सखिन संग सिय लाल निहोरी
गइ लिवाइ कोट के भीतर । अद्भुत रचना दिखवति अन्दर
कहुँ दिवाल के अन्दर प्यारी ।दम्पति चित्र सु न्यारी न्यारी
कहुँ पांसे खेलत दोउ जोरे। गोटी मारत करि करि गौरे ॥
कहूँ गेन्द खेलत दोउ प्यारे। निज निज यूथनि लेत सँवारे॥
छमकि झमकि कै गेन्द उठावत ।सीना तानि तानि के ताड़त
कहूँ पतंग उड़ावत हँसि हँसि । निज२ दावन काटत फँसि२
कहुँ पच्छिन को पाठ पढ़ावत । निज २ जीतन दाँव बतावत॥
कहूँ अश्व पै चढ़ि के दोऊ। मृग पाछे धावत सँग सोऊ॥
कहुँ विपरीत श्रृङ्गार सँवारे । क्रीड़त हैं दोउ रस मतवारे ॥
यहि बिधि दोउ को नाना केली।चित्रित भीतिनमें रँग रेली

भँवर न कबहूं जात है, चम्पकली ढिग भूल ।
स्याम भँवर नित झूमहीं, बैठि सुचम्पक फूल ॥
बैठि सुचम्पक फूल भूल भरमत दिन रतियां ।
चम्पक सी सुकुमारि प्यारि लगि लगिकै छतियां ॥
विभव बिलास हुलास स्वाँस अरपित कर सबहूँ ।
मोहनि 'प्रेम प्रभा'स भूल पिय भँवर न कबहूं ॥
(श्री सिया सनेह सुधानिधि)

सखियन युत सियलाल निरखिके अचरज मानत हैं हँसि २के
यहि विधि कौतुक देखत नाना। आये बाग मध्य स्थाना॥

सिंहासन बैठे दोउ जोरी। चहुँ दिसि सखियन मंडल रूरी॥
वागेश्वरि भोजन बहु धरिकै। दुहुँन पवावत स्वादन कहिकै॥
पुनि जल प्याइ कराई अचवन। बीरी देइ लगाई अतरन॥
करि आरति सखियन युत नाचै। पिय प्यारीके कौतुक राँचै॥
इहि विधि चम्पक बाग में, करि बिहार पिय प्यारि।
चन्दन बन की सुरति करि, चलत भये संग नारि॥

॥ इति श्रीचम्पक बन बिहार ॥

चम्पक वरनी नागरी, चम्पकली उर धारि।
चम्पक तरु सी है खड़ी, चम्पक वन निरुवारि॥
चम्पक बन निरुवारि नारि नव तन वसिकर है।
स्याम वेलि रहि अरुझि करन टारन मनहर हैं॥
वसन चंपई रंग विभूषन हूं सुख भरनी।
'प्रेम प्रभा' सब साज मोहिनी चम्पक वरनी॥

(श्री सिया सनेह सुधानिधि)

चम्पलता चम्पक सुवन, चंचरीक चित सेय।
लेय युगल आनन्द रस, रहस वारि निज देय॥

(श्रीयुगल विहारिणी जू कृत दोहावली)

❀ अथ चन्दन बन बिहार ❀

(वार्ता)

❀ चन्दन बन स्वरूप वर्णन ❀

— ❀ —

प्रथम कोट की चारों ओर स्फटिक मणिमय दीवालें हैं, जिनमें बिविध रङ्गों की मणियों की रचनाएँ हैं। नव तल्ले हैं प्रत्येक खण्ड में तरह तरह की रचनाएँ बनी हैं।

पाँचों आवरणों के कोट इसी तरह बिविध रंगों के बने हैं। प्रत्येक आवरण के अन्तराल में नाना तरह के कुंज निकुंज बने हैं।

श्री मान चन्दन वन के पूरब में श्री स्नान कुंज एवं श्री फाग कुंज हैं। दक्षिण में श्री मान चम्पक बन हैं। पश्चिम में महा यूथेश्वरी श्री मती हेमा जी का महल है। उत्तर में श्रीमान पारिजात वन हैं। यहाँ की वागेश्वरी का नाम श्री मती चन्दनाङ्गी जी है।

प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्रीसरयू की धारा है। धारा के एक ओर मलय (श्री खंड) बृक्षों की पंक्तियाँ सजी हैं, दूसरी ओर विविध प्रकार के फलों का बागीचा है। इस बागीचे में गोरोचन प्रगट करने वाली सुरभियों (गौओं) का यूथ बिचरा करता है।

दूसरे आवरण में हरिचन्दन, कालीयक (पीत रंग का चन्दन) कालागरु, तिलपर्णी (लाल चन्दन , गोशीर्ष (कमल गन्ध वाला चन्दन)

चन्दन बन के वहिर्कोट के द्वार पर सखियों से परि-वारित श्रीप्रिया प्रियतम जू पधारे। द्वार रक्षिकाओं ने आपके शुभागमन सूचक नगारे पर चोप दिया। वह शब्द सुनकर प्रधान कुंजेश्वरी ने निज अनुचरियों के सहित आकर आपको प्रणाम किया। पट पांवड़े देती हुई अपने कुंजमें लिवा गईं।

श्रीमहाराजनन्दिनी एवं श्रीमहाराजनन्दन जू को सिंहा-सन पर विराजमान कराकर, षोडशोपचार से पूजन किया। तत्पश्चात् आरति नृत्य करके बार बार बलैया ली।

मांगल्या (चमेली गन्ध वाला चन्दन), अगर, तगर, कंकोल, जायफल धूप आदि विविध सुगन्ध मय बृक्षों के उपवन पृथक् पृथक् सजाबट के साथ लगे हैं। इनमें कस्तूरी मृगों के यूथ विचरते रहते हैं। बीच बीच सरोवर वापी आदि कमलाकुल जलाशय हैं।

तीसरे आवरण में चारो ओर केशर की क्यारियाँ सजी हैं। किसी क्यारी के बीच में फूल बंगला बना है, किसी में मोती महल, किसी में खसखाना, किसी में तहखाना बना है; क्योंकि इस बन में सदा ग्रीष्म ऋतु बनी रहती है। प्रत्येक क्यारी में नाना आकार वाले जल यन्त्रों से विविध इत्रों के फुहारे छूटते रहते हैं। इस बन में भैरवी, गुर्जरी, रेवा, गुणकरी वंगाली और बहुली नामक स्वकीय पत्नियों के सहित भैरव राग श्रीमैंथिली जू की सखी स्वरूप से नित्य निवास करती हैं।

चौथे आवरण में द्वादश सेवा कुंज हैं। कोई कुंज महल मोती का, कोई चन्दन काष्ट का, कोई खस का बना है।

तत्पश्चात् श्रीप्रिया प्रियतम जू सखियों के संयुक्त सब कुंज निकुंजों की रचनाएँ देखने लगे।

चन्दन बन के मध्य में एक चन्दन ह्रद (सरोवर है। इसमें चारों तरफ मणिमय सोपान (सीढ़ी) बँधे हैं। तट से सटे हुये अनेक आकारों के बुर्जे (जल में) बने हैं। तड़ाग के मध्य में भी एक बुर्जा बना है। तड़ाग के तट पर चारों तरफ चन्दन की वृक्षावली लगी है। चन्दन की सुगन्ध से संपूर्ण बन आमोदित हो रहा है ❀। चारो कोनों में चार बंगले बने हैं। तड़ाग में जल के अभ्यन्तर अनेक गुप्त खंड खंडान्तर बने हैं।

पाँचवे आवरण में चन्दनोदक से परिपूर्ण विशाल सरोवर है। सरोबर के मध्य में मलयाचल पर्वत हैं। पर्वत शिखर पर सुविशालचन्दन वृक्ष है, जिसके नीचे रास वेदिका बनी है।

❀ प्रकृति मण्डल में भी चन्दन अपने आस पास के वृक्षों को सुवासित कर देता है, तथा इसकी सुगन्ध सुदूर प्रान्तों के बायु मण्डल को सुरभित कर देती है।

यहाँ तो स्वतः सौरभमय दिव्य देश और बहाँ के चन्दन बृक्ष। फिर तो उसकी सुगन्ध सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड को सुवासित करने में समर्थ है।

"जेहि शुभ सौरभ परसि पूत पवमान प्रानप्रिय।
पूरित विपुल विनोद निखिल जग मध्य मधुर हिय॥
सरस सुगन्धित सकल सुवन अन्तर मारुत कृत।
सुमन सुभाविक सुभग सुमन सुमनस हुलास हृत॥

(श्रीयुगल विनोद विलास ३।१४)

तड़ाग का जल अतिशय सुगन्धमय है । उसमें श्वेत, पीतादिक कमल खिले हैं । कमलों पर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं । चन्दनों की नौकाएँ अनेक प्रकार की बनी हैं ।

वहाँ सखी समाज सहित श्रीप्रिया प्रियतम जू पधारे । चन्दन हृद को देखकर आपको ससमाज जल बिहार करने की उमंग उठी । उस उमंग का इतना अधिक आवेश हुआ कि भूषण वसन भी नहीं उतारने पाये । सब के सब सचैल जल में कूद पड़े ।

*** चौपाई ***

जल बिहार विहरत रघुनन्दन । चपल चातुरी कर मन रंजन
कर संपुटमें जल भरि रसि कै । सिय नैननमें छिरकत हँसिकै
सिय हू जल भरि पिय को मारे । लोचन तार किये रतनारे
प्रीतम छींटा मारि मारि के । नयन लाल करि दइ प्यारी के
जल कन नहिं सहि सकी पियारी । नयनन मूंद लई करवारी

श्रीचन्दन बन के अन्तर्गत द्वितीय आवरण में स्थित श्रीहरि चन्दन उपवन का विहार श्रीहनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी के द्वितीय अध्याय में इस प्रकार वर्णित है--

विहरन्तौ बने तस्मिन् हरि चन्दन संज्ञिते ।
यत्र वृक्ष लताः कुंजाः हेम वल्कल शालिनः ।। ३२ ।।
नाना प्रसून प्रवरा युक्ता मत्त मधुव्रतैः ।
खगैः कनक चित्रांगैः कूजद्भिरभिनन्दिताः ।। ३३ ।।
सुरत्न मणिमाणिक्य वेदी मन्दिर मण्डिताः ।
सखीनां गान कलया सुगन्धानिल सेविता ।। ३४ ।।

*दोउ दल सखियाँ न्यारी २ । खोलि रही जलकन लै सारी
देखी मोद सिया सुकुमारी । जल सींचन से व्याकुल भारी॥
दौड़ो आइ सिया की ओरी । जल अंजलि पिय नैनन छोरी॥
पिय जलकन तिहि नैनन मारैं । बड़ो चलाक करन तैं टारैं॥
बार २ जलकन भरि अंजलि । पिय नैनन में छींटति चंचलि

पिछले पृष्ट वाले श्लोकों का भावार्थ: –

श्रीलड़ैतीलाल जू हरि चन्दन नामक वन में विहार कर रहे हैं। यहाँ के लता बृक्ष सभी स्वर्ण वल्कल वाले है। नाना उत्तमोत्तम पुष्प खिले हैं। उन पर मत्त भ्रमर मड़रा रहे हैं।

चित्र विचित्र सुनहले अङ्ग वाले पक्षी अपने कलरव से वहाँ आनन्द का संचार कर रहे हैं।

वहाँ रत्नमणि माणिक्य की वेदी पर मन्दिर स्थित है। सखियाँ गान कर रहीं हैं। सुगन्ध पवन डोल रहा हैं।

"चन्दन वन विलसत नितैं, सिय रघुनन्दन साथ।
ताप हरन शीतल करन, हिय जिय होत सनाथ ॥"

(श्रीयुगल विहारिणि जी की दोहावली)

* चन्दन वन विहरत लली लाल । सुख यंत्र चलत दुति चंद घाल ॥
छलकत चन्दन छबि सुभग अंग । लखि लाजि रहत अगनित अनंग ॥
युग चरन संग युग चरन जाय । दरसत हौजन बिच दृग लुभाय ॥
कर यंत्र मंत्र सम लगत हीय । छवि 'मोहनि' मोहन चपल कीय ॥

(श्रीसिया मोहिनी शरण कृत वर्षोत्सव पद सं० १६८

तबसो कियो पियाको बिह्वल।नयन ढके पियतब निज करतल
तबतक नयन खोलि निज प्यारी।पियकी दशा देखि झटकारी
झटकि पिया कटि पकड़ी प्यारी।कहौ लाल का करौं तिहारी
पिय बोले सुनु प्रान पियारी। सब विधि तुम से हार हमारी

सुनि प्यारे के वचन मृदु, सिय लइ कंठ लगाइ।
अंकमाल दै चूमि मुख, बहु विधि लेत बलाइ ॥

पुनि बिहरन लागे सिय प्यारे। सखिन संग श्रीराजदुलारे ॥
काहू पकरि माल गर तोड़त। काहू जल में लै झकझोरत ॥

चन्दन पुतरी सी खड़ी, चन्दन वन सुकुमारि।
चन्दन लेपन ग्रीव बिच, चन्दन सी भुज डारि ॥
चन्दन सी भुज डारि प्यारि पिय हार गरे बनि।
इक भुज अंसन बीच एक लेपति सुगंध सनि ॥
खींचत अपनी ओर जोर भरि लखि इत उतरी।
'प्रेम प्रभा' भरि अंक मोहनि चन्दन पुतरी ॥

तब ताके पिय मोद सुओरे । अपनों दांव लेन को दौरे ॥
पकरि लई भट करन मरोरी । छिटकि गई सो सिय की ओरी ॥
चन्द्रकला कह सुनों खिलारो । मोद न ऐहैं हाथ तिहारी ॥
जौं इन के रस चाखा चहिये । तौ सिय जू के पाँयन गहिये ॥

यहि बिधि सों जल केलि कै, सखिन संग सिय लाल ।
लालन नब श्रृङ्गार सजि, चलत भई सब वाल ॥

॥ इति श्रीचन्दन बन बिहार ॥

सीतल चन्दन सरिस तन. मेटत पिय संताप ।
कोमल चन्दन ते अधिक, देत मदन की ताप ॥
देत मदनकी ताप आप अपनी दिशि कसि कसि ।
मदन मरोरा खात पीय नव तन प्रिय फँसि फँसि ॥
रसबस करत निहोर भोर भावन सुख कन्दन ।
'प्रेम प्रभा' लगि अंग मोहिनी शीतल चन्दन ॥

❀ अथ पारिजात बन बिहार ❀

❀ दोहा ❀

पारिजात बन द्वार पै, ललो लाल दोउ आय।
सखिन नगारे चोप दइ, शब्द कुञ्ज प्रति छाय ॥

श्री पारिजात वन श्री कनक महल से वायव्य (पश्चित्तर) कोण में है। इनके पूरब श्री मान विहार वन, दक्षिण श्री मान चन्दन वन, पश्चिम श्री मती हेमा जी का महल है। यहाँ की वागेश्वरी जी का शुभ नाम श्रीमती गुणागरि जू है।

पारी समुद्र को कहते हैं, जात नाम उत्पन्न। अर्थात् समुद्र मंथन से प्रगट होने वाले चौदह रत्नों में एक पारिजात बृक्ष भी है। यह बृक्ष इन्द्र को मिला था। श्री सत्यभामा जी के आग्रह वश श्री द्वारकाधीश भगवान इन्द्र से उसके एकमात्र पारिजात को छीन लाये थे। यहाँ तो स्वयं प्रगट असंख्य पारिजातों का बन ही बना हुआ है। श्री पारिजात बन स्थित स्थावर जंगम सबों में कामद शक्ति है।

प्रथम आवरण के मध्य अवकाश में श्रीसरयू धारा है। कौस्तुम, स्यमन्तकादि दुर्लभ मणिगण श्रीसरयू अपने उभय तट बगेरी रहती हैं। उन्हें कोई पूछता भी नहीं। धारा के दोनों ओर पारिजात बृक्षों की पंक्तियाँ सजी हैं।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण उत्तर काण्ड के अ० ४२ श्लोक संख्या २ में पारिजात बृक्ष की कान्ति निर्धूम अग्नि के समान बताई गई है-

(वार्ता)

❁ पारिजात बन का स्वरूप वर्णन ❁

प्रथम कोट में चारों तरफ हरित मणि की दीवाल है और अनेक रङ्गों की मणियों से नाना प्रकार की रचनाएं बनी हैं। इसी प्रकार पाँचों कोट कोई नीलमणि, कोई पीतमणि करके बने हैं।

अन्तराल की भूमि स्फटिक मणिमय है। उसमें अनेक रङ्गों की मणियों से बेल बूटे बने हैं। अन्तरालों के मध्य में बिबिध रङ्गों की मणियों से अनेक आकारों के कुंज बने हैं। कोई कुंज कमलाकार है, कोई कमठाकार है, कोई सोता फला-कार है, कोई सारी फलाकार है। इस प्रकार अनेक भेदों से बने हैं।

"शोभितां पारिजातैश्च बिधूम ज्वलन प्रभैः ॥"

उनमें कामधेनु बृन्द चरा करती हैं। यहाँ की भूमि चिन्तामणि-मयी है। यहाँ की केलि कल्लोल भावना भी चिन्तकों को मनोवांछित देने में समर्थ है। आगे श्रीयुगल विनोद विलास की उद्धृत प्रथम पंक्ति देखिये।

"कामद केलि कलोल करत…"

द्वितीय आवरण में विविध जातियों के पुष्पों के पृथक पृथक चौक बने हैं। प्रत्येक चौक में अमृत सरोवर है। प्रत्येक सरोवर के मध्य में रास ंगला बना है। देवकन्या, गन्धर्व कन्या, किन्नर कुमारी आदि देव जाति

श्रीप्रिया प्रियतम जू के शुभागमन के नगारे सुनकर, अपना अनुचरियों के संयुक्त श्रीरागेश्वरीजी ने आकर प्रणाम किया।

की कन्याओं के रासनृत्य के हिसाब से इन सरोवर के रास बंगले पृथक पृथक भेद से बने हैं।

तृतीय आवरण में लताओं के कुंज, निकुंज, बंगले, मण्डप आदि बने हैं। रास कालीन ऐकान्तिक विहार के निमित्त इनमें पर्यंक तथा विविध भोग पदार्थ सजे रखे रहते हैं।

चतुर्थ आवरण में विविध भोगैश्वर्य से समृद्धमान द्वादश सेबा कुंज बने हैं।

"क्रीडयंश्च ततः श्रीमान् ययो वन मनुत्तमम्।
पारिजात द्रुमै र्यत्र वेष्ठितं परमाद्भुतम्॥
नाना रत्न मणि स्तम्भ कदंबै रन्वितं गृहम्।
सर्व भोगै स्समायुक्तं मनोभिलषितं च यत्॥
श्रीहनुमत्संहिता रासपंयोध्यायी २।३५।३६

अर्थात् श्रीजानकी वल्लभ जू अन्य वन में बिहर का परमाद्भुत पारिजात बृक्षों वाले उत्तम बन में पधारे। इस बन के महल नाना रत्न-मणि स्तम्भो से सम्पन्न हैं तथा मनोभिलाषित सुख देने वाले सभी भोग पदार्थ से भरे हैं।

पांचवें आवरण के मध्य में विशाल क्षीर सरोवर है। सरोवर के मध्य में कामदगिरि है। गिरि शिखर पर बिशाल पारिजात बृक्ष है। उसके नीचे रास चत्वर है। कामद गिरि से पय सरिणी के विविध झरने बह कर क्षीर सरोवर में गिरते रहते हैं।

श्रीयुगलसरकार को पट पाँवड़े देकर अपने कुंज में लिवा ले गई। सिंहासन पर पधराकर, षोड़शोपचार से पूजन किया। आरति उतार कर नृत्य गान करने लगीं।

"कामद केलि कलोल करत हिय हरत होस सब।
पारिजात वन सघन निरखि दम्पत्ति प्रसन्न तब॥
अगनित मनिमय महल अर्हनिस चहल पहल अति।
विविध वितान विचित्र विजित रचना नित रतिपति॥
चौक चांदनौ चारु चमक छज्जन प्रति छाजत।
कलस केलि संकलित महा मनिगन भल भ्राजत॥
विसद विहार बहार विपुल अति अमल अनुपम्।
नवल निकुंजन मध्य मधुर रस रहस स्वरूपम्॥
सौज सुहावन सुधा सार सम्पन्न सरस सुचि।
जेहि लखि छकि चित चौन ऐन आनन्द बढ़त रुचि॥
नाना मनिगन कलित ललित सद सदन सोहावन।
रतन रचित रमनीय थंभ भासत प्रिय पावन॥
सकल भोग गत सोग सतत सोहत सनेह सर।
निखिल मनोरथ सफल सजत सावित सहाय कर॥
मनमथ रति आवेश वेस भीने रसेस रस।
ललित लड़ैती लाल लट्ट लपटे विहार वस॥
उज्जल सजल उमंग रंग रस रंगे रमत नित।
झुकत नैन वर नैन, रुकत बैसुध तन मन चित॥

पुनः फूलों के रौसों पर कुंज निकुंजों की शोभा दिखाने लगीं। किसी ठौर पर रंग रग के फूलों की क्यारी बनी है। किसी ठौर पर चारों तरफ फूलों की क्यारी है, उसके मध्य में फूलों की बेदी बनी है। उस पर सखिन संयुक्त श्रीप्रिया-प्रियतम जू विराज गये। नाना प्रकार की रसमयी वार्त्ता होतीहै।

उदित मुदित अनुराग चारु चित चंद फंद मन ।
प्रसरित विसद उजास रास रस अति प्रमोद घन ।।
विहरत नवल किशोर चारु चित चोर ओर चहुं ।
प्रान पिया करजोरि नटन सम गति विहरत कहुं ।।
(श्रीयुगल विनोद विलास २१४-७९)

—: कुण्डलिया :—

प्यारी हित प्रीतम रचत, निज कर नित नव सेज ।
पारिजात भव सिन्धु ते, पारिजात वन तेज ।।
पारिजात वन तेज तेज भवसिन्धु भयावन ।
श्रम विनु पार सुदेत सुखद सीय पीय मिलावन ।।
छूये से कुम्हिलात अंग मृदु लगि सो विकसित ।
'प्रेम प्रभा' पिय रचत सेज मोहनि प्यारी हित ।।
(श्री सिया सनेह सुधानिधि)

— दोहा —

पारिजात मुद व्रात प्रद, सुमन सुरुचि सखि हार ।
युगल विहार सुप्यार गर, पहिराइये दिलदार ।।
(श्रीयुगल विहारिणाजी कृत दोहावली)

पुनः उठकर चलते हैं। जब चलते हैं, तो यूथ के यूथ मृगछौने आते हैं, जिन के कण्ठों और चरणों में सोने के मंजीर पड़े हैं। जब चलते और कुलाँचते हैं, तो मंजीरों के शब्द से सम्पूर्ण कुंज प्रदेश मुखरित हो उठता है। उन मृगाओं के बच्चों को श्रीप्रिया प्रियतम जू बहुत दुलारते हैं। वह बच्चे भी श्रीप्रिया प्रियतम जू के चरणों को चूमते हैं। पुनः आप बिबिध भाँति की मिठाइयाँ अपने करकंजों में ले ले कर उन्हें पवाते हैं। इसी तरह से नाना प्रकार के पक्षियों के साथ खेल करते हैं। उन्हें चुगाते हैं।

इस प्रकार कुंजों के रौसों पर खेलते हुये श्रीप्रिया-प्रियतम जू ने मध्य के कक्ष में प्रवेश किया। वहाँ पर सखियों ने आपको नाना तरह के व्यंजन भोजन कराये। पान मसाला दिया। अतर लगाया। आरति उतारी, तत्पश्चात् नृत्य गान किया।

श्रीपारिजात बन में नाना प्रकार की केलि क्रीड़ायें कर श्रीयुगलकिशोर जू बिहार बन के लिये प्रस्थित हुये।

॥ इति श्रीपारिजात बन बिहार ॥

❀ अथ विहार बन बिहार ❀

❀ वार्ता ❀

❀ श्रीविहार बन का स्वरूप बर्णन ❀

प्रथम कोट में चारों तरफ पाटलमणि की दीवालें हैं। उनमें अनेक रंगों की मणियों से बेल बूटे, जाली झरोखे बने हैं।

सात कक्ष करके श्रीविहार वन बने हैं। सातों कोटों की रचनाएँ नाना तरह की मणियों से बनी हैं।

श्री कनक महल से उत्तर दिशा में श्री विहार बन स्थित हैं। इनके पूर्व में श्री कदम्व बन है, दक्षिण में श्री फाग कुंज तथा श्री शृङ्गारकुंज हैं, पश्चिम में श्री पारिजात बन है, उत्तर में श्रीमती क्षेमाजी के महल का विस्तार है। श्रीमती हेम मंजरीजी यहाँ की वागेश्वरी हैं।

श्री विहार बन के प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्रीसरयू धारा है। धारा के दोनों ओर विविध जातियों के फूल फल वाले वृक्षों के मधुर मधुर उपबन बने है। किसी उपबन में क्रीड़ा शैल है, कहीं नील, पीत, श्वेत, हरित रंग की मणियों की विविध आकार वाली वेदिकाएं बनी हैं। वेदिकाओं पर कहीं बंगले, कहीं मण्डप बने हैं। इन उपबनों में श्वेत, पीत, लाल, हरित, धूसर रंग के, दुरंगे, पचरंगे, षटरंगे मृगाओं के यूथ छलांग मारते फिरते हैं। श्री प्रियतम जू कहीं कामेश्वर पूजन लीला, कहीं दान लीला, कहीं चीर हरण लीला रचते हैं। कहीं मान लीला होती है।

दालानों के भीतर दीवालों में अनेक तरह के चित्राम बने हैं। ऊपर चन्दोवे लगे हैं, जिनमें मोतियों की झालर लगी है। दरवाजों में अनेक रंगों के जड़ीदार पट पिधान पड़े हैं। परदों के प्रान्त भाग में किंकिणी लगी हैं। उठाते छोड़ते समय शब्द होता है। नीचे की भूमिकाओं में रेशमी जाजिमें बिछीं हैं। उनके ऊपर अनेक पर्यंकादि बिछे हैं।

कोटों के अन्तरालों में अनेक कुंज निकुंज बने हैं। तिन के मध्य में अनेक रंगों की वृक्षावली लगी है। तिन के मध्य में लताएँ लिपट रहीं हैं। उनपर तरह तरह के पक्षी कूज रहे हैं। भवँर गुंजार कर रहे हैं।

द्वितीय आवरण में षट ऋतु विहार के कुंज बने हैं।

❀ कुण्डलिया ❀

विकसित कमल तड़ाग बिच, रितु सुसुखद हेमंत।
विपिन विहार सुहार तजि, भँवर विहार एकन्त ॥
भँवर विहार एकंत कंत प्यारी सँग ठानै।
समय महल सुख चहल पहल कहि कहि सममानै ॥
आगे ग्रीषम कुंज तड़ाग भरे चोरत चित।
'प्रेम प्रभा' जहँ होति मोहिनी कुंज विकासित ॥

तृतीय आवरण में लताओं के कुंज, निकुंज, बंगला, मण्डप आदि बने हैं।

जहाँ तहाँ महलों में यूथ की यूथ सखियाँ गान कर रही हैं।

मध्य मध्य में कहीं वेदी, कहीं बँगले, कहीं तड़ाग, कहीं तड़ाग के मध्य में बँगले बने हैं। इस प्रकार से विहार वन शोभित है।

*** चौपाई ***

संग लिये सखियन सिय प्यारे। वन विहार के आये द्वारे॥
बागेश्वरी सुनि आनन्द भरि के। लै आई बहु स्वागत करिके

चतुर्थ आवरण पुष्प कुंज मय है। कहीं पुष्प मय फाग चौक, कहीं पुष्प मय गेन्द चौक, कहीं पुष्प मय रास चौक, कहीं पुष्प मय डोल चौक, कहीं पुष्प शृङ्गार चौक सजे हैं।

पंचम आवरण मणि कुंज मय है। इस आवरण में कही माणिक महल, कहीं मर्कत महल, कहीं विद्रुम महल, कहीं मोती महल, कहीं पद्म-राग महल, कहीं पुखराज महल है। इस प्रकार से अनेक मणि रत्नों के महल पृथक पृथक बने है। इनमें भाँति भाँति की केलि क्रीड़ाएँ श्री-लड़ैती लाल जू करते हैं।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुंज बने है। उनकी दीवालों में विविध युगल विहार के चित्राम अङ्कित हैं।

सातवें आवरण के मध्य में मधु सरोवर है। सरोवर के मध्य में पाटल मणि शैल है। शैल शिखर पर गंधराज नामक विशाल बृक्ष है। उसके नीचे रास मण्डप बना है। रास मण्डप के चारो ओर विविध लता निकुंज पर्यंकादि से सजे है।

सिंहासन मनि जटित सजाई। पिय प्यारी सादर बैठाई॥
करि पूजा भोजन करवाई। बहु विधि व्यंजन स्वाद बताई॥
करि आरति बहु नृत्यहुँ कीन्हीं। भाव बताइ ललन सुख दीन्हीं
चली लिवाइ बाग के कुञ्जन। जहँ बरसत अनन्द के पुञ्जन॥
देखहु लालन बाग निकाई। जनु अनेक अमरावति आई॥
कहूँ लाल मुनियन के पुंजे। आई पास लगी अति गुंजे॥
कहूँ मोर की पाँती आई। नृत्य करन लागी सुखदाई॥
कहूँ कीर के यूथे सोहैं। पाठ सुनत मुनि जन मन मोहैं॥
कहूँ सारिका मिलि मिलि पुंजें। चोंच मिलाइ लगी अति गुंजे
कहूँ हंस की पाँती आई। मोती चूगन लगी सुहाई॥
कहुँ पारावत यूथें आये। अपनी प्यारिन कंठ लगाये॥
कहूँ कोकिला यूथे बोलें। प्यारी प्रीतम सुख अनुकूले॥
कहुँ पपिहा पिउ पिउ पुकारे। विरहिन कोमल हृदय विदारे॥

विहार वनमागम्य केलि कुंजं च गह्वरम्।
रेमे तत्र चिरं रामः स्वै रामार्पित विग्रहैः॥
(श्री शिव संहिता पृ० ३६। ४६)

अर्थात् श्रीजानकी जीवन जू केलि कुंजों से घनीभूत बिहार बन में पधारे। वहाँ आप चिरकाल तक उन मनोरामाओं के साथ विहार करते रह गये, जिनने अपने विग्रह आपको समर्पण कर दिये हैं!

कहुँ पच्छी सब सभा लगाई । दोय दल करि बैठे मन भाई ॥
एक पच्छ प्यारी गुन गावै । दूजे प्रीतम गुन दरसावै ॥
यद्यपि प्रीतम हैं गुन आगर । प्रिया गुनन दवि जात उजागर
प्रीतम के गुन एको माहीं । प्रिया गुनन नाहिन झलकाहीं ॥

※ श्रीप्रीतम पच्छ की उक्ति ※

प्रीतम गुन हम कहौं बखानी । मन चित दैके सुनहु सयानी
एकहि बार कहत जो कोई । हौं मैं तोर और नहिं कोई ॥
तौ प्रीतम तन मन से वाको । छोड़त नाहि सत्य ब्रत जाको

※ श्रीप्रिया पच्छ का प्रतिवाद ※

प्रीतम तो इक बार कहन के । आस रखत हैं शरन नरन के॥
प्यारी तो यह आशा तिनकी । राखत नाहि सदा पन जिनकी
जो मैं जीव दोष को टोऊं । तौ निर्दोष होय नहिं कोऊ ॥
दोषी निर्दोषी वा होई । मम शरनागत आवै सोई ॥
राखौं ताहि प्रान को नाईं । यह प्रन सत्य सत्य जगमाहीं ॥
यह सुभाव सुन्दर सुनि सियके। लोचनललित भरे जल पियके
यहि प्रकार पच्छिन की शोभा । निरखत प्यारी प्रीतम लोभा॥
कहुँ मृगन के यूथ घनेरे । लेहि कुलाँच कुञ्ज चहुँ फेरे ॥
कोइ पीत कोइ सेत लाल हैं। कोइ घूसर कोइ हरित वाल हैं
कोइ दुइ रंग पंच रँग कोई । कोइ चतुर रँग षट रँग कोई ॥

यहि प्रकार बहु रंगन केरे। मृग शावक विचरहिं अतिनेरे॥
आइ चुमत पगदूरि भगत हैं। पुनि चुचुकारत आइ मिलत हैं
पाँयन में मंजीरन बाजैं। सो धुनि कुञ्ज निकुञ्जन गाजे॥
कहीं द्रुमन की पाँति घनेरी। जाति जाति की है बहुतेरी॥
तिन मूलन में मणिमय वेदी। नील पीत रँग हरित सफेदी॥
तामैं वेली बूटे सोहैं। रचना देखि अधिक मन मोहैं॥
लता लिपटि रहिं बृच्छन माहीं। प्रीतम अंग प्रिया जस चाही
तापै फूल लगे बहु रंगे। हरित पीत श्वेतादिक संगे॥
तापर भवँर पुञ्ज के पुंजे। छाइ रहे मधुरे सुर गुंजे॥
दृष्टि पड़त मुनियन के अंगे। जागि उठे मनसिज नवरंगे॥
यहि प्रकार प्यारी सँग लालन। कुञ्जन कुञ्ज फिरे बहु वालन॥

यहि प्रकार बहु बाग की, शोभा निरखत लाल।
प्यारी सँग आये तहाँ, जहाँ काम के शाल॥

मणिमय बँगले सुन्दर राजे। शोभा देखि काम मन गाजे॥
ताके मध्य सेज अतिसुन्दर। मनसिज बास कियो जनु अन्दर
ताके ऊपर बिछी सपेती। मानों दूध फेन को जीती॥
तापर राजै राज दुलारे। प्यारी के अंसन भुज धारे॥
प्रीतम प्यारी सुखमें पागी। चहुँ दिसि सखिन झरोखन लागी

प्रीतम प्यारी सुख अनुकूलै । निरखि २ सखियन तन फूलै ।।

यहि विधि से बहु खेल करि, बन बिहार सिय लाल ।
बन कदम्ब को सुरति करि, चले बैठि सुखपाल ।।

।। इति श्रीबिहार बन विहार बर्णन ।।

विविध बिहार विहार वन, विहरत अलि ललि लाल ।
एकान्ती चित चिंत कय, हित वित पाय निहाल ।।
श्रीयुगल बिहारिणी जी ।।

अथ कदम्ब वन बिहार

❀ वार्ता ❀

❀ श्रीकदम्बन का स्वरूप वर्णन ❀

प्रथम कोट में चारों तरफ विद्रुममणि की दीवालें हैं। उसके ऊपर अनेक रंगों की मणियों से रचना बनी है। चारों तरफ चार फाटक हैं। फाटक की रचना अनेक तरह से बनी है। इन में बज्र के किवाड़े लगे हैं, सुन्दर तोरन लगे हैं।

श्री कदम्ब वन के पूरब में श्री नागकेशर वन हैं, दक्षिण में श्री-कलेवा कुंज तथा श्री सभा कुंज हैं, पश्चिम में श्रीविहार बन हैं, तथा उत्तर दिशा श्रीमती सुभगाजी का महल है। यहाँ की वागेश्वरी श्रीमती अनुरागा जी हैं।

कदम्ब का अर्थ कदम्ब बृक्ष तथा कदम्ब का अर्थ समूह भी होता है। श्रीहनुमत्संहिता के अनुसार ' वरं कदम्बैः परिवेष्टितं महत्'' अर्थात् वह कदम्ब नामक परमोत्तम वन कदम्ब बृक्षों से आवृत है। अर्थात् प्रथमा-वरण में चारो ओर कदम्ब की सघन बृक्षावली लगी है।

श्री युगल विनोद विलास के अनुसार ''कलित कदम्ब विचित्र विपिन बहु बनन वलित वर।'' अर्थात् इस वन के अभ्यन्तर बहुत से मधुर मधुर उपवन बने है। श्री अग्रस्वामीजी के संस्कृत अष्टयाम से भी श्री कदम्ब बन के अभ्यन्तर वहुत से उपबनों का होना सिद्ध होता है। वह उद्धरण आगे लिखा जाता है।

इसी प्रकार पाँचों कोटों की रचनाएँ रंग विरंग की अनेक तरह की मणियों से बनी हैं।

कोटों के पाँचो अन्तरालों में अनेक तरह के कुंज निकुंज बने हैं। उनके मध्य में अनेक जातियों की बृक्षावली चारों तरफ लगी है। उसके मध्य में छोटे छोटे फूलों के बृक्ष लगे हैं। उसके मध्य में मणियों के गमले लगे हैं। उसके मध्य में कहीं बँगले, कहीं वेदी, कहीं चारो कोनों में वेदी, मध्य में नाना आकारों की वेदियाँ, कहीं तड़ाग अनेक रङ्गों की मणियों से अनेक रचना युक्त हैं। कहीं तड़ाग में अनेक रङ्गों के कमल

श्री कदम्ब वन के प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्री सरयू जी की धारा बहती हैं। धारा के दोनों ओर कदम्ब बृक्षों की सजीली पंक्तियाँ लगी है। प्रत्येक कदम्ब बृक्ष में झूला पड़ा है। सावन हिंडोल उत्सव का वहाँ बिशेष समारोह रहता है। श्री कदम्ब वन के झूले के अनेक पद रसिकार्यों के रचित उपलब्ध हैं। उनमें नमूने के लिये एक पद नीचे उद्धृत किया जाता हैं।

दशरथ राज दुलारे सिया सँगे झूलै हो।
सरयू किनारे सुहाई कदम जुरि छहियाँ हो।
ताहि तर झूलैं हिडोरा दिये गलबहियाँ हो॥
एक ओर जनक किशोरी सखिन सँग झूलैं हो।
एक ओर राघो विहारी लली मुख जोहैं हो॥
प्यारी की लट पिया जुलफन झूलत अरझै हो।
अचल रहो 'सखे श्याम' कबहु नहि सुरझे हो॥

खिले हैं। इन कमलों के ऊपर भँवरों के झुण्ड के झुण्ड गूँजार कर रहे हैं। भँवर भी अनेक रङ्गों के हो रहे हैं।

जब सखिन समाज संयुक्त श्रीमहाराजनन्दिनी जू एवं श्री-महाराजनन्दन जू श्रीकदम्ब बन के प्रथम कोट के फाटक पर आये, तब कोट के दरवाजे की रचना देखकर अति आनन्द युक्त हुये।

दूसरे आवरण में बिबिध द्रुमों के पृथक पृथक उपबन बने हैं। श्रीमद् अग्रस्वामीजी के संस्कृत अष्टायाम श्लोक ४१, ४२ में इनकी चर्चा आई है।

"तुलसी पुष्प सौरभ्य नित्योत्सव सुमण्डितम्।
वासन्ती चम्पकाशोक पारिजात महोद्यतम्॥
मालती यूथिकाम्भोज कुन्द मन्दार सेबितम्।
केतकी मल्लिकोद्भासत्कदम्ब तरु मण्डितम्॥"

अर्थात् परम रमणीय श्रीकदम्बबन में श्रीतुलसी एवं बिबिध पुष्प बृक्षों से सुवासित, नित्योत्सव से विभूषित, वासन्ती श्री से सम्पन्न, चम्पक अशोक, पारिजात, मन्दार, कदम्ब आदि बृक्ष तथा मालती, यूथिका, कुन्द, केतकी, मल्लिका आदि की लताएँ विलस रही हैं। इन सबों के उपबन पृथक २ समझना चाहिये।

तीसरे आवरण में बिबिध लता कुञ्ज बने हैं। ऊपर के उद्धरण में जितने बृक्षों के नाम आये हैं, उनके उपवन दूसरे आवरण में हैं तथा जिन लताओं के नाम गिनाये गये हैं, उनके कुंज तृतीय आवरण में समझना चाहिये। इनमें कहीं कहीं तड़ाग, बावली आदि बिबिध रमणीक जलाशय बने हैं।

श्रीयुगलकिशोर जू के वहाँ पहुँचते के साथ सखियों ने नगारे पर चोप दिया। सो सुनकर अपनी सखियों के यूथ के संयुक्त कोट के भीतर के कुंज से श्रीवागेश्वरीजी आईं। श्रीप्रिया प्रियतम जू को प्रणाम किया। पुनः सर्वेश्वरी श्रीचन्द्र-कला जू को प्रणाम किया, तत्पश्चात् सभी सखियों से मिलीं।

इस प्रकार से श्रीलड़ैतीलाल जू को पट पाँवड़े देती हुई, अपने कुंज को लिवा चलीं। जैसे मतवाला गज अपनी करिणियों के संयुक्त चले, इस प्रकार चले।

किवदन्ती है कि कदम्ब बृक्ष सुहागिनी कामिनी के चरण स्पर्श करते ही फूल उठताहै। हमारे सुहाग भाग से इस बन को प्रफुल्लता होती है, ऐसा जानकर श्रीप्रिया जू नित्य एक रूप से इसी बन में प्राण प्रिमतम जू के सहित शयन सुख लेती हैं। यथा—

कदम्ब कानने रम्ये लता मण्डप मध्यगे।
मत्त भ्रमर गुञ्जार कोकिला रव संकुले ॥ ४३ ॥
वर्हालि सारिका श्रेष्ट शव्दिते शुक कूजिते।
वृक्षगुल्म घनच्छाया कुञ्जपुञ्ज मधुस्रवे ॥ ४४ ॥
नृत्यन्मयूर निकरे नाना पक्षि विराजिते।
सरयू जल कल्लोल सङ्ग मारुत सेविते ॥ ४५ ॥
प्रफुल्ल कमल प्रख्ये मरन्दा मोद मेदुर।
तत्र प्रसून शयने समा सीनान्तु जानकीम् ॥ ४६ ॥

(श्रीअग्रस्वामी कृत संस्कृत अष्टयाम)

बागेश्वरीजी ने श्रीयुगल सरकार को सिंहासन पर विराजमान करा कर, षोडशोपचार से पूजन किया। आरति उतारकर नृत्यगान किया। तत्पश्चात् सखियों के संयुक्त श्री-प्रिया प्रियतम जू को नाना प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। अतर लगाया। पान की बीटिका दी।

अर्थात् परम रमणीय श्री कदम्ब बन है। वहाँ लता मण्डप की शोभा का वर्णन कर रहे हैं। वहाँ पुष्पों पर मतवाले भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। वह बन प्रदेश कोकिल काकली तथा मयूर आदि सारिका के कलरव तथा सुग्गों के कूजन से मुखरित हो रहा है। समीप में बृक्ष गुल्मों की सघन छाया है। उनसे मधु स्राव हो रहा है। वहाँ मोर नाच रहे हैं। नाना पक्षी फुदकते फिरते हैं।

एक सरयू नहर वहाँ भी प्रभाहित हो रही है। उस प्रवाह में मिल कर पवन अठखेलियाँ कर रहा है। वहाँ स्निग्ध मकरन्द पूर्ण प्रफूल्ल कमल के समान पुष्प शय्या पर श्रीजनकेन्द्र नन्दिनी जू विराजी हैं।

चतुर्थ आवरण में द्वादश मणिमय सेवा कुंज बने हैं।

पाँचवे आवरण के मध्य में सुगन्धित जल से परिपूर्ण सरोवर, के मध्य में विद्रुम मणिमय पर्वत शिखर पर सुविशाल कदम्ब बृक्ष है। उसके नीचे रासवेदिका बनी है।

पुनः श्रीवागेश्वरीजी सखियों के संयुक्त दोनों सरकारों को कुंजों की रचना दिखाने लगीं। कहीं तरह तरह के फूलों की क्यारियाँ बनी हैं। कहीं तरह तरह के फूलों के बंगले बने हैं। कहीं लताओं के बँगले बने हैं।

श्री कदम्ब वन विहार वर्णन श्रीयुगल विनोद विलास के दूसरे अध्याय में छन्द ४ से १५ तक पढ़िये। यहाँ स्थानाभाव से उद्धृत नहीं हो सका।

कबहूँ जाय कदम्ब बन, तोरत फूल कदम्ब।
मारत गेन्द निहारि उर, वचत सुदृग अवलम्ब॥
वचत सुदृग अवलम्ब, लंब प्रिय प्रेम पिछानै।
मुसुकनि घूंघट ओट चोट लगि भृकुटी तानै॥
कबहूं कुच रस ख्याल सैन पिय लखि कर जबहूं।
'प्रेमप्रभा' बलि जाय मोहिनी भावन कबहूँ॥ १॥

ठाढ़ी नवल कदम्ब तर, अँगुरी कर धरि डार।
पँखुरी मनहुँ कदम्ब की, सहत न मुंदरी भार॥
सहत न मुदरी भार, भार यहि ते रखि डारैं।
जगमगाति नग जोति होति सुखमा की वारैं॥
पवन लगे तन खुलत वसन उड़ि रहे रस बाढ़ी।
'प्रेमप्रभा' सुकुमारि मोहिनी बन तन ठाढ़ी॥
बन कदम्ब दम्पति रमत, सम्पति रहस कदम्ब।
श्री मानस नन्दिनि सुतट, रसिक संत अवलम्ब॥
श्रीयुगल विहारिणिजो)

कहीं मोर नृत्य कर रहे हैं। कहीं पक्षी परस्पर कूज रहे हैं। कहीं दीवालों में नाना तरह के चित्राम बने हैं। इस

तौ तत्र दृष्ट्वा विपिनं मनोहरं वरं कदम्बैः परिवेष्टितं महत्।
यन्मूल वेदी मणिमाल संयुता हेमैर्महार्हैः परितः प्रसन्ना ॥२॥

नाना सुगन्धानि वनानि कानि प्रफुल्लतानीह समं समंतात्।
द्विरेफ माला शुभ संयुतानि पिबन्तिमाध्वीक रसानि सर्वतः॥३

पतन्ति मत्ता रजसारुणाङ्गाः नयन्ति केचित्कुसुमाकरेषु।
क्वचिन्मयूराः परिनृत्ययन्ति गायन्ति कीराः क्वचिद्प्रेमयाः ॥४॥

अन्ये द्विजाः जाम्बुनदाङ्गनस्थाः निरक्षयन्ते रघुवंश नाथम्।
ध्यानेक्षणाः सद्य निमेषणाश्च चित्तार्पिताश्चिन्मनसोवभूवुः ॥५॥

(श्रीहनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी द्वितीय अध्याय)

अर्थात् श्री युगल सुकुमार मनहार जू ने वहाँ पधार कर परम मनोहर बन देखा। वह कदम्ब वृक्षों से घिरा हुआ था। वृक्षों के मूल में अमूल्य स्वर्ण एवं मणि गण की वेदिकाएँ बनी थीं। वह सब ओर से सुख दायिनी थीं।

जलाशयों में सुगन्धित जल भरा था। उनमें कमल खिले थे। सब तरफ मकरन्द पान करते हुये भ्रमर पंक्ति गूज रही थी। भ्रमर पुष्परज से रंग कर अरुण हो रहे थे। रसपान से मत्त होकर गिर जाते थे, पुनः अन्य पुष्पों पर जा बैठते थे। कहीं मयूर नाच रहे थे। कहीं सुग्गे गा रहे थे।

प्रकार से अनेक तरह की शोभा देखते श्रीयुगलविपिन बिहारी श्रीनागकेशर बन को चले ।

॥ इति श्रीकदम्ब बन विहार ॥

अन्य पक्षी स्वर्णमयी भूमि पर स्थित होकर श्रीजानकीकान्त जू की मुख माधुरी अवलोकन कर रहे थे । उनके अर्धोन्मीलित नयन ध्यान मुद्रा बतां रहे थे । अपने चित्त को चितचोर कोशलकिशोर को सुपुर्द कर दिया तथा चिन्मयानन्द में छक गये ।

❀ अथ नागकेसर बन बिहार ❀

(वार्ता)

❀ श्री नागकेसर बन वर्णन ❀

— ❀ —

प्रथम कोट में पद्म राग मणि की रचना बनी है। यह बन पाँच आवरण वाला है। पाँचों परकोटे भिन्न २ रंगों की मणियों से रचना युक्त हैं। कोटों के मध्य भागों में अनेकों तरह के कुंज निकुंज बने हैं।

"चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः।" इत्यमरः

अर्थात् नागकेसर के चाम्पेय केसर, और काञ्चनाह्वय नामान्तर हैं। नागचंपा और बज्रकाठ भी इसे कहते हैं। इसमें श्वेत रंग के सुगन्धित पुष्प खिलते हैं।

श्री नागकेसर बन के पूरव सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू का महल है। इनके दक्षिण में श्री श्रृङ्गार बन हैं। पश्चिम में श्री कदम्ब बन हैं तथा उत्तर श्री सुभगाजी के महल का विस्तार है। श्रीमती कृष्णा जी यहाँ की वागेश्वरी हैं।

प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्री सरयू धारा है। धारा के दोनों ओर नागकेसर बृक्षों की सजीली पंक्तियाँ लगी हैं। बृक्ष ही कहीं बंगलाकार, कहीं मंडपाकार बने हैं।

द्वितीय आवरण में लता कुंज, तृतीय में पुष्प कुंज तथा केसर बयारियाँ चतुर्थ में द्वादश सेवा कुंज हैं।

जब कोट के फाटक पर दम्पति की अवाई हुई, तब श्रीबागेश्वरीजी नगारे के शब्द सुनकर आईं और दरवाजे से पूर्वोक्त भाँति से सत्कार कर, उन्हें अपने कुंज में लिवा लाईं। पूजन करके अनेकों तरह के व्यंजन भोजन कराये।

पञ्चम आवरण में केसर नीर से परिपूर्ण सरोवर है। सरोवर के मध्य में केसराचल पर्वत है। पर्वत शिखर पर कल्पवृक्ष है। उसकी छाया में रास वेदिका बनी है।

यथावन्यद्वनं यत्र नागकेसर मण्डितम्।
यस्याविदूरे सरयू तीरं परम पावनम्॥
दृष्ट्वा सर्वाः प्रहृष्टात्मा सख्यः प्रेम पूरिताः॥
श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी २।३९, ४०)

अर्थात् श्री युगल किशोर जू तत्पश्चात् दूसरे वन में पधारे, जहाँ नागकेशर के बृक्ष लगे हैं। इस वन के समीप ही परम पावन श्री सरयू पुलिन हैं। इसे देख सबके सब प्रसन्न हो गईं तथा सखियाँ तो प्रेम में निर्भर हो गईं।

"करि केसर सुभ नाम सघन कानन किसोर कल।
ललित लोनाई लाल लसत जेहि मध्य मधुर भल॥
बन समीप सुचि स्वच्छ सरस सोभित सरजू जल।
दरस परस पय पान करत हिय हरत मोह मल॥
प्रवल प्रेम प्रिय धाम माँझ बिश्राम पाय अति।
गावन लगी ललाम ललन रस चरित रमित मति॥
नृत्यहिं नेह निचोल नवल अंगन प्रति पहिरे।
मगन मधुर आनन्द सुधा सागर गुन गहिरे॥

तत्पश्चात् दोनों सरकार कुंज निकुंजों की रचना देखने लगे। कहीं बैठकर चौसर खेलते हैं, कहीं गेन्द खेलते हैं, कहीं चकई खेलते हैं, कहीं पतंग उड़ाते हैं, कहीं पक्षियों को लड़ाते हैं, कहीं आँख मिचौनी खेलते हैं, ❀ कहीं दम्पति प्रेम के भार से परस्पर लपट रहते हैं।

इस प्रकार से अनेक खेल करते तथा अनेक कुंजों की रचना देखते अनङ्ग बन को चले।

॥ इति श्री नागकेसर बन बिहार ॥

कामिनि काम प्रकास करन कौतुक कलाप रचि।
सियवल्लभ निज नेह छको सौन्दर्य सार सचि॥
(श्रीयुगल विनोद विलास २।८३-८६)

❀ इन खेलों के लिये तीसरे आवरण में पृथक पृथक चौक बने हैं एक एक जाति के पुष्प तथा केसर की एक एक क्यारी हैं। प्रत्येक क्यारी में एक एक क्रीड़ा चौक हैं। ऊपर जितने नाम गिनाये गये हैं, उनसे भी अधिक यहाँ नाना प्रकार के खेल चौक बने हैं।

"बैठे केसर नाग वन, लेपत केसर अंग।
सरके वसन सिंगार तन, केसर हो तन जंग॥
केसर हो तन जंग ढङ्ग आपनी लगावैं।
चावैं चौगुन चढ़ें उघारि अंगन रस पावैं॥
रवि हित होत अधीर वीर पिय मदन सुऐंठे।
'प्रेम प्रभा' मोहिनी सुनागकेसर वन बैठे॥
विपिन नागकेसरि न सरि, युगल विलास प्रकास।
द्वादश वन मन रमन करु, लहु मुद द्वादश मास॥
(श्रीयुगल विहारिणिजी)

❀ अथ अनङ्ग बन बिहार ❀

वार्ता)

❀ श्रीअनङ्ग बन स्वरूप बर्णन ❀

प्रथम कोट में श्याम मणि की दीवाल है। उसमें अनेक रंगों की मणियों से बेलि बूटे, झरोखे जालियों की रचनाएँ बनी हैं। यह बन सप्त कक्ष करके युक्त है। सातों कोटों की रचना भिन्न भिन्न मणियों से बनी है।

मनोज भोग सम्भवं कुमार राम वैभवं,
अलौकिकादलौकिकं निबोध शौनकाशु वः।
इदं मुदं तनोतु नो मयोदितं तु यत्तु वः,
करोतु लोक मंगलं रसादि भाव संकुलम्॥
(श्रीबृहत्कौशल खंड ५।१३१)

अर्थात् सूत जी कहते हैं कि हे शौनक, आप शीघ्र ऐसा जान लें कि श्रीकौशलेन्द्र कुमार जू के मनोज भोग पूर्ण जो भी वैभव हैं, सब दिव्यातिदिव्य हैं। मैंने शृङ्गारादि भाव से सम्पन्न जो श्री जानकी जीवन जू की विहार लीला सुनाई है, वह हम लोगों को परमानन्द प्रदान करने वाली तथा लोक मंगल करने वाली होवे।

तात्पर्य यह है कि पाँचभौतिक अधमातिअधम स्थूल शरीर धारियों के विषय सुख दुर्गन्ध पूर्ण, घृणास्पद एवं दुःख परिणामी हैं, किन्तु श्री–

चारो तरफ चार चार दरवाजे सब कोटों में बने हैं। उनके मध्य मध्य वाले कुंजों की दीवालों में अनेक तरह की केलियों के चित्राम बने हैं। किसी किसी कुंज की दीवालों में तरह तरह के मनुष्यों के चित्राम बने हैं। दिवालों में किसी

जानकी बिहारी जू की दिव्य मनोजरसमयी विहारलीला शाश्वत दिव्यानन्द प्रदान करने वाली एवं अमृत फल देने वाली है ।

श्रुत्वा कथामिमां निन्देन्मातु र्योनि मिवाधमः ।।

(श्रीशिव संहिता २०।१२०)

अर्थात् जो लोग बुद्धिवाले हतभागी व्यक्ति ऐसी दिव्य भगत्कथा की निन्दा करेंगे, वह दुर्बुद्धि अपने मातृ अंगों की निन्दा करने वाले समझे जायेंगे।

श्री अनङ्ग बन से पूरब सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू के महल का विस्तार हैं, दक्षिण श्री शृङ्गार बन हैं, पश्चिम श्री सभाकुंज तथा श्री-भोजन कुंज हैं, तथा उत्तर श्री नागकेशर वन हैं। यहाँ की बागेश्वरी श्रीमती रति मंजरी जी हैं।

प्रथमावरण के मध्य अन्तराल में श्रीसरयू धारा है। धारा में मीनादि जलचरों तथा हंसादि जल पक्षियों के जोड़े परस्पर में क्रीड़ासक्त दृष्टिगोचर होते हैं। धारा में लाल कमल और नील कमल खिले हैं। ये मंदन के क्रमशः मोहन और उन्मादन सर हैं। धारा के उस पार मंजरियों से भरे आम्र बृक्षों की सघन सजीली पंक्तियाँ लगी हैं। रसाल बृक्ष के नामान्तर कामायुध, काम फल, मन्मथानन्द एवं मदनालय भी है। इसी पर बैठ कर आम मंजरियों के शोषणास्त्र द्वारा मदन इस बन में स्थित

स्थान पर नायिका नायक परस्पर परिरम्भगण किये हैं। किसी जगह पर नायिका नायक के साथ पुरुषायित आसन सजे हुई हैं। कहीं दोनों परस्पर नागर बन्ध से खेल रहे हैं, कहीं चक्र-बन्ध से खेल रहे हैं। इस तरह से अनेकों आसन, अनेकों बन्ध-वाले कोकोक्त रीति से चित्राम बने हैं। बतौर प्रत्यक्ष दर्शित होते हैं। जिनके देखते ही मदनाग्नि प्रज्वलित हो उठता है। किसका अख़्त्यार है कि सम्हाल सके?

इसी प्रकार कुंजों में, बंगलों में, वेदिकाओं में, कहीं पक्षियों की, कहीं मृगों की जाति जाति के भेदों से जोड़े अनेक भेदों से रति कल्लोल करते हुये चित्राङ्कित हैं। लतायें वृक्षों के साथ लिपट रही हैं। वृक्षों से मद टप टप चू रहा है।

कामी कामिनियों को प्रपीड़ित करता रहता है। रसाल वृक्ष पर बैठी कोकिला मारु राग का तान छेड़ कर मदन वीर को प्रोत्साहित करती रहती है।

धारा के दोनों ओर पुलिन पर चमेली पुष्प की पंक्ति है। चमेली मदन का स्तंभन सर होती है। धारा में तैरती हुई मीन मानो मीनकेतु की विजय वैजयन्ती फहरा रही है।

धारा के इस पार पुष्पवती लताओं से समालिंगित सघन अशोक द्रुमावली है। इन्हीं के कुंज, निकुंज, बंगले, मण्डप बने हैं। अशोक पुष्पों का संतापनास्त्र प्रयोग कर, मदन इस बन में स्थित व्यक्तियों के विग्रह में कामाग्नि प्रज्वलित करता रहता है। उस समय कोई भी नायिका हो, श्रीरघुचन्द जू से मिलने को विरहातुर हो उठती हैं। यथा-

स्वयं पक्षी जहाँ के तहाँ रति कल्लोल परस्पर जोड़े मिल कर, कर रहे हैं। तड़ागों में अपनी करेणुओं के साथ मदान्ध मतंग कल्लोल कर रहे हैं। मानों काम की राजधानी यही है। इस तरह से श्रीअनङ्ग वन की विचित्र रचना बनी है।

पिय पास कोउ पहुंचावो रे।
पंच वान अंग अंग वेधित हिय, कोउ श्याम चुम्बक लै आवो रे।
जहर भरे सर तन मन दाहत, कोउ माह वदन सो जिआवो रे।
अबहीं चलत नरी फेरत न मिलत सही, पछिताय रही कछु हाथ न आवोरे
'नवल विहारी प्रिया' चन्द्रकला जू, पिय प्रियतम सों मिलावो रे।

दोनों पार के द्रुम बनों में बिचरते मृग जोड़े परस्पर क्रीड़ासक्त रहते हैं। वहीं दशा द्रुम डालों पर बैठे पक्षी जोड़ों की है। प्रथमावरण में वसन्त का नित्य निवास है। यहाँ श्रीयुगलकिशोर जू डोलोत्सव बिहार करते हैं।

द्वितीय आवरण के कोट महल वाले दीवालों पर साम्प्रयोगिक प्राक् व्यापारों के सुललित चित्र अङ्कित हैं। नायक नायिका के सम्मिलन भेद। १ स्पृष्टक, २-विद्धक, ३-उद्धृष्टक, ४-पीड़ितक, ५-लतावेष्टित, ६-बृक्षाधिरूढ़, ७-तिलतण्डुल, ८ क्षीर नीरक, ९-उरूपगूहन, १०-जघनोपगूहन, ११-ललाटिका, और १२-संवाहन आदि चित्र इस कला से अंकित हैं मानों प्रत्यक्ष दृश्य हों।

द्वितीय आवरण के अन्तराल में ग्रीष्म ऋतु का नित्य निवास है। अतः उस ऋतु के सुखदायक उपकरण यहाँ सजे हैं। फूल बँगले, मोतीमहल खसखाने, तहखाने आदि विविध इत्रों के फुहारों से संयुक्त ठौर ठौर पर

❋ चौपाई ❋

चले सियापिय सखिनअनेका। काम बागके निरखनओका॥
पहुँचे कोट द्वार पै जाई । सखी दुन्दुभी दई बजाई ॥
शब्द गये महलन के भीतरि । दम्पति लेन आइ बागेश्वरि ॥
करि पूजा सनमान बड़ाई । पट पाँवड़ दै चली लिवाई ॥
लै आई निज कुंज अँगनाई। पिय प्यारी आसन बैठाई ॥
सखियन मंडल सन्मुख सोहै । सिंहासन दम्पति मुख जहै॥
विविध भाँति भोजन करवाइ । पान मसाले अतर सुंघाई ॥

सजे हैं । बीच बीच में प्रफुल्ल पङ्कजों से परिपूर्ण पुष्करिणियाँ बनी हैं । कमलों पर मदन दूत भ्रमर गुंजार के व्याज से मनोज मन्त्र का पाठ कर रहे हैं। त्रिविध पवन कामाग्नि का सहायक बना है।

तृतीय आवरण के कोट दीवालों पर विविध बोश प्रयोग के चित्र अङ्कित हैं । १-निमित्तक, २-स्फुरितक, ३-घट्टितक, ४-अवपीड़ितक, ५-सम, ६-पीड़ित, ७-अञ्चित, ८ मृदु, ९-रागदीपन, १०-चलितकम्, ११-प्रतिबोधक, १२-त्रिपीडत, १३-भ्रमित, १४ उल्लसितक, १५-संहतोष्ठ और १६-वैकृतक आदि भेद वाले भाव व्यंजक चित्र कलात्मक ढंग से अङ्कित हैं ।

इस आवरण में तमाल एवं कदम्ब द्रुमों के कुंज, निकुंज, बंगले आदि बने हैं । यहाँ पावस का नित्य निवास रहता है। अतः हिंडोल विहार की प्रधानता रहती है। बीच बीच के कासारों में नौका जल विहार होता है ।

वागेश्वरि बोली मृदुवानी । सुनिये प्रीतम प्रिया सयानी ॥
चलिये प्यारे बाग दिखाऊं । जेहि देखत कुसुमेषु जगाऊं ॥
सुनि सखि वचन उठे रघुनंदन । प्रिया अंस दीन्हें भुजबंधन ॥
प्रथम गये मणियन के कुञ्जन । देखे विविध चित्र सुखपुञ्जन
निधुवनविधि बहुभाँतिन नागर। नागरि संग मिले छविआगर
कहुँ२सुन्दर मिलि दोउजोरी । प्रणय कलहवश करभककोरी

चौथे आवरण के कोट दीवालों पर । १–आच्छुरितक, २–अर्ध-चन्द्र, ३–मँडल, ४–रेखा, ५–व्याघ्र नख, ६–मयूरपदक, ७–शशप्लुतक और ८–उत्पलपत्रक भेद के नखर बिलेखन चित्राङ्कण दर्शाये हुये हैं । इसी प्रकार से दशनच्छेद्य के भी १–गूढ़क, २–उच्छूनक, ३–विन्दु, ४–विन्दुमाला, ५–प्रवासमणि, ६–मणिमाला, ७–खण्डाभ्रक, और ८–वाराह चर्वित आदि नाम वाले विविध भेद चित्रित हैं ।

इस आवरण में पुष्पोद्यान के बीच बीच विविध लता निकुंज, लता मंडप, लता बंगले आदि बने हैं । यहाँ शरद का नित्य निवास रहता है ।

पाँचवे आवरण की दीवालों पर १–उत्फुल्लक, २–विजृम्भितक, ३–इन्द्राणी, ४–संपुटक, ५–पीडितक, ६–वेष्टितक, ७–वाड़वक, ८–जृम्भितक, ९–अर्ध पीड़ितक, १०–वेणु दारित, ११–शूलाचितक, १२–कार्ककट, १३–परावृत्तक आदि संवेशन कालीन विविध योगासन के चित्र अङ्कित हैं ।

कहूँ नवोढ़ा नागरिका कै । पिय फुसलाय रहे वहु दै कै ॥

*** दोहा ***

आये लता निकुंज में, जुगल दिये गलवाह ।
लता छटा को देखि के, करत प्रसंसा नाह ॥
चहुँ दिसि लता निकुञ्जमें, सोभा देखि विसाल।
पुनि आये द्रुमकुञ्जमें, सखिन संग सियलाल॥

इस आवरण में मरकत, माणिक्य, पद्मराग, वँशच्छद, स्यमंतक, कौस्तुभ, प्रवाल आदि विविध मणि रत्नों के पृथक पृथक कुञ्ज वने हैं । इसीसे इस आवरण का नाम मणि कुञ्जावरण है। इन विविध कुञ्जों की दीवालों पर भी १-स्थिर २-अवलम्बितक, ३-धेनुक, ४-संघाटक, ५-गोयूथिक आदि असंख्य प्रकार के चित्ररत के योगासन चित्राङ्कित है । यहाँ हेमन्त और शिशिर का नित्य निवास है ।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुञ्ज वने हैं। सर्वत्र अनंगोत्सव के उपयुक्त भोगैश्वर्य भरे पड़े हैं ।

सातवें आवरण में मधुरासव परिपूर्ण सरोवर हैं। सरोवर के मध्य में श्याममणिमय मदनाचल है । शैल शिखर पर सन्तानक बृक्ष है। उसके नीचे रास वेदिका बनी है । रास चत्वर के चतुर्दिक पर्यंकादि से सुसज्जित विविध निकुञ्ज बने हैं । यहाँ शरदुमिश्रित बसन्त का नित्य निवास है ।

द्रुमन बने महलें अति सुन्दर। द्रुम के बंगले बने मनोहर ॥
द्रुम ही के गमले सुठि सोहैं। द्रुमनहि साज सजे सब जोहै॥
यहि विधि से द्रुम कुञ्ज विहारी। फूल कुञ्ज आये पिय प्यारी
फूलन महल अटा फूलन के। कलस कंगूरे सब फूलन के ॥
फूल चन्दोवा फूलन झालर। फूलन मय सब रचना आगर॥
फूल निकुञ्ज बने बहुतेरे। फूलन सेज बिछी चहुँ फेरे ॥
बहुत कहौं का कथा बड़ाई। फूलन मय सब साज सजाई ॥
तापर बैठे प्यारी प्यारे। करत विनोद विलास अपारे ॥

"पावस समय अनंग वन, मनु अनंग अँग धार।
विहरन जंग उमंग भरि, नैन अनंग पसार॥
नैन अनंग पसार चार ह्वै चतुर लरत है।
भिरे अंग निज दाव हेरि रति खेत अरत है॥
झरझरात घनस्याम सीय दामिनि दुति छावस।
'प्रेम प्रभा' दोउ वीर मोहिनी मूरति पावस॥"

वन अनंग सुविदेहजा, अलि रघुनन्दन संग।
विलसत विहँसत अंग अंग, वारिये अमित अनंग॥
(श्रीयुगल विहारिणीजी)

यहि रसके अधिकार न औरन यह रस तो सखियन के जीवन
सखियन निरखत हैं चहुँ ओरी। पिय प्यारी रस छकि भइबौरी
काहू को सुधि नहि तन मनकी। प्रिय प्यारी रसमें दिये बुरकी
यहि सुखको का करौं बखानी। 'मोद' पुलक तन मन रहसानी

करी केलि बहु भाँतिसे, प्यारी प्रीतम लाल।
सखि दूजे सिंगार करि, सिंहासन बैठाल॥
बहुविधि व्यंजन साजिके, कुंजेश्वरि बहुथाल।
धरि आगे सिय लाल के, लगी पवावन बाल।
भोजन विविध कराइके, बीरी ललित सँवार।
पिय प्यारी मुख में दई, लागी करन बयार॥
वन अनंग के बीच में, विविध भाँति करि केलि।
वन शृङ्गार की सुरति करि, चली सखिन सँग रेलि॥

॥ इति श्री अनंग वन विहार वर्णन॥

"सुन्दर स्यामल अंग लखि, गढ़न निराली ढंग।
मैन मैन कहि लाज बस, तजि अंग भयो अनंग॥
तजि अंग भयो अनंग अंग पिय लखि सरमायो।
ह्वै अनंग हरि रूप भूप जग जोति समायो॥
रति गुमान गति भंजि रामहूं के चित वित हर।
'प्रेमा प्रभा' है गोरि मोहिनी सिय अंग सुन्दर॥

❋ अथ श्रृङ्गार बन बिहार ❋

❋ वार्ता ❋

❋ श्री श्रृङ्गार बन स्वरूप बर्णन ❋

प्रथम कोट में चारो तरफ इन्द्र नील मणि की दीवाल है। उस पर अनेक रंगों की मणियों की रचना है।

सात आवरण वाले श्री श्रृङ्गार बन हैं। सातों कोटों में चारों तरफ चार चार दरवाजे हैं।

श्री श्रृङ्गार बनके पूरब श्रीमती श्रीप्रसादाजी का महल है, दक्षिण श्री बिचित्र बन हैं। पश्चिम श्री दिवस शयन कुंज एवं श्री केलि कुञ्ज हैं, तथा उत्तर श्री अनङ्ग बन हैं। श्रीमती मदन मोहिनीजी यहाँ की वागेश्बरी हैं।

श्री श्रृङ्गार बन में उटवन मज्जन से लेकर सव प्रकारों से षोडश श्रृङ्गार सजाये जाते हैं। यथा—

''पुनि प्रभु गे श्रृङ्गार बन माहीं। नख शिख भूषन सुमन कराहीं ॥''

(रसिकेश श्रीकरुणासिन्धुजी की अष्टयाम पूजा)

''करत श्रृङ्गार श्रृङ्गार बन'' श्रीसियामोहिनी शरणजी।
इस बन के बृक्षों में श्रृङ्गारोचित भूषण वसन फलते हैं। यथा—

''विपिन श्रृङ्गार श्रृङ्गार नव, फलित ललित लावन्य।
यथा योग अंग अंग ही, रचिये होय अनन्य ॥''

(श्रीयुगल विहारिणिजी)

कोटों के अन्तरालों में अनेक रंगों के कुंज बने हैं। किसी कुंज में हरित, पीत, नील, श्वेत मणियों से रचनाएँ बनी हैं। किसी कुंज में पद्मराग मणि के ऊपर पीत, हरित, श्याम मणियों से अनेकों बेलि बूटे, झरोखे जाली आदि बने हैं।

कुवेर के चैत्ररथ नामक बन के बृक्षों के पत्तें ही बसन भूषण के रूप में पल्लवित होते हैं तथा दिव्य नारी ही फल के रूप में प्रगट होती है। यह प्रसंग श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकांड के ९१ सर्ग के श्लोक १९ में आया है। महर्षि श्रीभरद्वाज ससमाज श्रीभरतलाल जू का अपने आश्रम में आतिथ्य करने के लिये चैत्ररथ का आवाहन करते हुये कहते है:—

"बनं कुरुषु यद् दिव्यं वासोभूषण पत्रवत्।
दिव्य नारी फलं शश्वत् तत्कौवेर मिहैव तु॥

जहाँ चैत्ररथ के बृक्ष भूषण वसन प्रगट करते हैं, तहाँ श्रीसाकेत श्रृङ्गार बन के लिये कौन आश्चर्य है।

दिव्य देश के द्रुमलतादि सभी सच्चिदानन्द एवं कामद हैं। श्री-लड़ैती लाल जू की रुचि के अनुसार ही बरतते हैं। अतः इनमें श्रृङ्गारो-पकरण फलना आश्चर्यजनक नहीं है। प्रकृति मण्डल में भी श्रीधनाजी के तुम्बे गेहूं से भरे फले थे।

प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्री सरयू धारा बहती है। धारा के दोनों ओर फल फूलों के विविध बृक्षों के कुंज, निकुंज, बंगले

कुजों के मध्य में चारो तरफ से प्रान्त भाग में कहीं छोटी छोटी वृक्षावली लगी है, कहीं बड़ी बड़ी बृक्षावली लगी है। उन बृक्षों में से एक एक बृक्ष में कई तरह के फल, कई तरह के फूल लगे हैं। हरित, पीत, अरुण, श्वेतादि भेदों वाले लगे हैं।

किसी कुंज में कृत्रिम बृक्षावली लगी है उन पर कृत्रिम लताएँ चढ़ रही हैं। उन में नाना तरह के कृत्रिम फूल लगे हैं, तरह तरह के कृत्रिम फल लगे हैं। उन पर जाति जातिके कृत्रिम पक्षी बैठे हैं। पवन के प्रसंग से परस्पर कूज रहे हैं। कृत्रिम भँवर गूँज रहे हैं।

मण्डपादि बने हैं। इस आवरण में श्री प्रियतम जू अनुकूलनायक वन श्री-प्रिया जू के साथ तथा दक्षिण भेद से अमित रूप बना कर प्रत्येक नायिका के साथ उबटन मज्ज्जन विहार करते हुये, पारस्परिक अंग स्पर्श का रसानुभव करते हैं।

दूसरे आवरण में केसर क्यारी, तथा कंकोल, जायफल, श्रीखण्ड, हरिचन्दन आदि के द्रुम लगे हैं। इस आवरण में नायक नायिका परस्पर में अंग राग लगाने के ब्याज से स्पर्श सुखानुभव करते हैं।

तीसरे आवरण में पुष्पों के गुल्मलता, द्रुम सजे हैं। इनके फूलों को तोड़ने से पुष्पों के विभिन्न वसन भूषण तैयार निकलते हैं। पुष्पोद्यान के बीच कहीं फूल बंगले, कहीं फूल मंडप, कहीं फूल मय फाग चौक, हिंडोल चौक, गेन्द चौक आदि क्रीड़ा स्थल बने हैं। यहाँ सखियों के सहित श्री लाड़िली लाल जू पुष्प शृङ्गार धारण कर विविध क्रीड़ाएं करते हैं। यथा–

मध्य भाग में कहीं मणियों की वेदिका है। कहीं चारों कोणों में वेदिकाएँ तथा उनके मध्य में बंगला है। कहीं चारों कोणों में वेदिकाएँ तथा मध्य में भी वेदिका ही है।

हिंडारे झूलत कौसल चन्द ।
बाजहि बाजन मधुर गान ध्वनि, दसो दिसि होत अनन्द ॥
सरजू तीर सुभग सिंगार बन, ललित परन फल फूले ।
गुंजहि भ्रमर मधुर स्वर कोकिल, बोलहिं प्रिय अनुकूले ॥
फूलन केर विचित्र हिंडोरा, लसत फूल मय डोरी ।
फूलन के जुग खंभ मनोहर, रचि पचि मदन सच्यो री ॥
फूल मुकुट पट लसत लाल के, फूलन की सिय सारी ।
नख शिख लौं फूलन के भूषन, दंपति अंग सँवारी ॥
फूल तरंग उठत सरजू की, फूल बरषि घन धानी ।
'रामचरन' सखि सब श्रृङ्गार किये, फूल गान मय बानी ।'

देखो सखि, आवत रास बिहारी ।
सरजू तीर श्रृङ्गार विपिन ते, अति अनूप छवि न्यारी ।
.... ॥
संग सखी सोहैं अलवेली बनी ठनी छवि कारी ।
सुमन छिंगार किये नख शिख लौं, निज कर श्याम सँवारी॥
प्रभु आगे सखि खेलत आवैं, फूलन गेन्द उछारी ।
.... ॥

यहाँ ध्यान देने की बात है कि श्यामसलोने जू ने अमित्त रूप प्रगटाकर प्रत्येक सखी का सुमन श्रृङ्गार अपने कर कंजों से किया है।

कहीं मध्य भाग में वापी है, कहीं तड़ाग है। उनमें चारों तरफ मणियों की सीढ़ियाँ बनी हैं। उनके तटों पर चारों कोणों में बंगले बने हैं। कहीं मध्य भाग में केवल फरश ही है। उन भूमिकाओं में रंग रंग मणियों के फूल बने हैं। इस प्रकार सातों आवरणों में अनेकों तरह के कुंज निकुंज बने हैं।

इस प्रकार श्रृङ्गार बन का रूपक संक्षेप मे वर्णन किया, यथा भावानुसार।

चौथे आवरण में मोतियों के कुंज, निकुंज, महल, बंगले, मंडप आदि बने हैं। मोती के ही द्रुम लता लगी हैं। जिनमें मोती जटित अमोल पोशाक एवं मोतियों के भूषण फलते हैं।

पाँचवे आवरण के मणियों के कृत्रिम बृक्षों में मणि जटित भूषण फलते हैं। मणियों की जरतारी पोशाकें भी फलती हैं। मणियों के ही महल, मंडप, कुंज, निकुंज तथा विविध क्रीड़ायों के चौक बने हैं।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुंज हैं।

सातवें आवरण में सर्वोषधि जल परिपूर्ण सरोवर है। सरोवर के मध्य में श्रृङ्गार पर्वत है। उसके शिखर पर देवदारु का बृक्ष हैं। उसके नीचे रास चत्वर बना है।

करत सिंगार सिंगार बन, सिसिर सीत सुख लेत।
मीत मीत लपटत हिया, सी सी तिय रस देत॥

श्री महाराजनन्दिनी तथा श्री महाराजनन्दन जू श्री-प्रियाप्रियतम, मनमानी, सुखदानी श्रीचन्द्रकलादि सखी समाज संयुक्त, नागयान (हाथी रथ) पर बैठकर शृङ्गार वन के प्रथम फाटक पर आये।

सखियों ने नगारे पर चोप दिया। सो शब्द सुन कर श्री लाड़िली लाल जू की आवाई जानी। श्री शृङ्गार वन की वागेश्वरी जू ने निज सखी समाज संयुक्त आकर, श्री प्यारी लाल जू को प्रणाम किया। सब सखी समाज से मिलकर, पट-पाँवड़े देती हुई, निज कुंज में लिवा लाईं।

दोनों सरकारों को मणिमय सिंहासन पर विराजमान करा कर, षोडशोपचार से पूजन किया, आरति उतारी और नृत्यगान किया।

सी सी तिय रस देत, लेत प्रीतम सुख हिय लगि।
कसि कसि दोउ गरमात, गात रस काम अगिनि जगि॥
सखि ज्यों वार सँवारि, सँवारति अंग वसन टर।
'प्रेम प्रभा' पिय उठे आप मोहनि सिंगार कर॥

यों तो श्री शृङ्गार वन में ग्रीष्म ऋतु का ही नित्य निवास है, परन्तु ग्रीष्म के अनुरूप वहाँ इतने अधिक शैत्य प्रयोग किये गये हैं कि ग्रीष्म में ही शिशिर का अवतरण हो गया है।

"हेमन्त वत्तस्य निदाघ आसीद्वारि प्रवाहे हरिचन्दनाद्यैः।"

(श्रीबृहत्कौशल खंड १८।१०)

अर्थात् हरि चन्दन आदि सुगन्धित जल की नालियों के प्रवाह से वह ग्रीष्म ऋतु भी हेमन्त सी हो रही है।

तत्पश्चात् कुंजेश्वरियाँ अपने अपने कुंजों की रचना, ❀ शोभनीय वस्तु इत्यादि दिखलाने लगीं।

किसी कुंज में फूलों की रचना है। किसी में लताओं की रचना है, किसी कुंज में वृक्षों की रचना है। किसी कुंज में

❀ नीचे श्री शृङ्गार वन वर्णन श्री अमर रामायण अ० २२ से उद्धृत किया जाता है।

भवनात्कौशलेन्द्रस्य भागे सोत्तरपूर्वके।
वनं शृङ्गारकं नाम सर्वतः शोभनं परम्॥ १॥

फल पुष्प पलाशाढ्यैः द्रुमैः सर्वतु रम्यकम्।
लतानां सुप्रतानास्तत्कृतं कुंजं मनोहरम्॥ २॥

नाना वर्णैः पुष्पगुल्मै श्चर्दिक्षु विराजितम्।
भ्रमद् भ्रमरिकाभि स्तन्मधुर स्वर गुंजितम्॥३

मयूरीभि र्मयूरै स्तन्नृत्यन्निव कला गणैः।
पिकस्वनै र्गीयमानं मुनीनां हि मनोहरम्॥ ४॥

अर्थात् श्री चक्रवर्तीन्द्र जू महाराज के राजसदन से उत्तर पूर्वकोण में सब प्रकार से परम शोभायमान् श्री शृङ्गार बन हैं। १॥ पत्र पुष्प फल से समृद्धमान वहाँ के बृक्ष सभी ऋतुओं में रमणीक बने रहते हैं। उन पर लताए फैली हैं, जिससे मनोहरकुञ्ज बन गया है॥२॥ चारो ओर नाना रंग के फूल के पौधे शोभित हो रहे हैं। उन पर मड़राती हुई भ्रमरियाँ मधु स्वरसे गुंजार कर रही हैं॥३॥ मयूरों के साथ मयूरी अनेकों कलाओं

यूथ यूथ पक्षियों की शोभा दर्शनीय है। किसी कुंज में चारों तरफ से सखियों के पिंजड़ों में अवलि के अवलि पक्षी परस्पर पाठ कर रहे हैं। उसकी शोभा न्यारी है। किसी कुंज में सखियाँ परस्पर पक्षियों को लड़ा कर, एक से एक को जाताने की अभिलाषा कर रही हैं।

पठद्भिस्तु शुकैः किन्तदुद्गृणन्निव वैदिकम्।
खेलद्भि मृंग यूथैस्तु क्रीडमानं शुभायने ॥५॥

बहुशोऽन्ये पक्षिगणाःफलानि मधुराणि च ।
अदन्तो हि नदन्तस्ते निवसन्ति सुखं वनम् ॥६॥

से नृत्य करतीं रहती हैं। कोकिला स्वर के साथ गान कर रही हैं, जिससे मुनियों का मन भी मोहित हो जाता है ॥४॥ सुग्गे पाठ करते हुये ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो वेद की ऋचाएँ उगल रहे हैं। मृग यूथ खेलते हुये उस शोभन स्थल पर क्रीड़ा कर रहे हैं ॥५॥ अन्यान्य बहुत से पक्षी बृन्द वहाँ के मधुरफल खाते हैं, कलरव करते हैं और सुख पूर्वक उस बन में निवास करते हैं ॥ ६ ॥

वाताः सुगन्धमादाय पुष्पाणामति शीतलाः ।
प्रसरन्ति बने तस्मिन्मंदं मन्दतरं सदा ॥७॥

अर्थात् उस बन में पुष्पों से सुगन्ध लेकर शीतल पवन सदा मन्द मन्द बहते हैं ॥ ७ ॥